।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९६
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३१२०
सृष्टि सं.- १९७२९४९१२०

वर्ष–18 | अंक–6 | आषाण कृ. 14 से आषाण शु. 14 सं. 2076 वि. | 1–15 जुलाई 2019 | अमरोहा, उ.प्र. | प्रति–5/–

नहीं रहे सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासी

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

आर्यजगत् में शोक की लहर

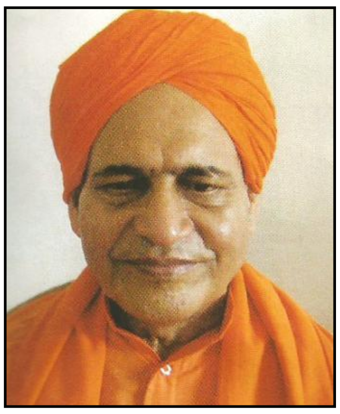

हरिद्वार। आर्य समाज के मूर्धन्य वैदिक विद्वान, सुयोग्य आर्य संन्यासी, डॉ. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी का 81 वर्ष की अवस्था में 28 मई 2019 को निधन का समाचार सुनकर समूचे आर्यजगत में शोक की लहर दौड़ गई। स्वामी जी आर्यसमाज की उन्नति के लिए हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहे थे। आप एक महान योगी और परोपकारी सद्भाव को लेकर जीवनभर मानवमात्र का मार्ग प्रशस्त करते रहे। कई महत्वपूर्ण विषयों में पीएच.डी. करके शिक्षा के क्षेत्र में आपने गुरुकुल चित्तौड़गढ, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल कांगड़ी आदि आर्य शिक्षण संस्थाओं में आर्य समाज की युवा शक्ति को सुदिशा प्रदान की। आप एक महान योगी, तपस्वी, सिद्ध, साधक, संन्यासी के रूप में योगधाम ज्वालापुर के माध्यम से योग प्रचारक की भूमिका निभाते रहे। स्वामी जी लंबे समय से अस्वस्थ चल रहे थे। अन्तिम संस्कार 29 मई, 2019 को हरिद्वार में हुआ। स्वामी मेधानन्द सरस्वती (मुकेश जी) ने मुखाग्नि दी।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान ओम प्रकाश आर्य, शिव कुमार मदान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री सतीश चड्डा, महेन्द्र सिंह, रामपाल पांचाल, स्वामी प्रणवानन्द जी, ब्र. नन्दकिशोर, स्वामी मुक्तानन्द, स्वामी चितेश्वरानन्द, स्वामी सोमानन्द, स्वामी यतीश्वरानन्द, डॉ. महावीर अग्रवाल, आचार्य विरजानन्द देवकर्णी, आचार्य ऋषिपाल, आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार सहित फरीदाबाद पंचकुला की अनेक आर्यसमाजों के सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्रद्धांजलि सभा 31 मई को पातंजल योगधाम आश्रम हरिद्वार में हुई।

काशी शास्त्रार्थ की स्मृति में आर्य महासम्मेलन ११ से

वाराणसी। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. द्वारा 11 से 13 अक्टूबर 2019 तक काशी शास्त्रार्थ स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन का वृहद आयोजन करेगी। ज्ञातव्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा काशी में ऐतिहासिक शास्त्रार्थ 16 नवम्बर 1869 (संवत् 1926) को हुआ था। यह नवयुग की आहट था। काशी में हुए शास्त्रार्थ में आचार्य विशुद्धानन्द, पं. माधवाचार्य, पं. बाल शास्त्री आदि सहित अनेक विद्वानों से महर्षि दयानन्द ने शास्त्रार्थ किया था। सभा प्रधान धीरज सिंह तथा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने प्रदेश सहित देशभर की आर्यसमाजों तथा आर्यजनों से अपील की है कि अभी से आने का संकल्प कर लें तथा प्रदेश की आर्यसमाजें इन तिथियों में कोई भी कार्यक्रम न रखें और अपने ईष्टमित्रों सहित महा सम्मेलन में भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनायें।

राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन ८ जुलाई को

ऋषिकेश (देहरादून)। न्यूज़ पेपर्स एण्ड मैगजीन्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया (एन.एम.एफ.आई.) की 11वीं वर्षगांठ एवं संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रवि रस्तोगी, सम्पादक हिमालय और हिन्दुस्तान के 55वें जन्मदिवस पर हिमालय और हिन्दुस्तान फाउण्डेशन द्वारा 8 जुलाई 2019, सोमवार को तुलसी विहार, हरिद्वार रोड, श्यामपुर, ऋषिकेश में दोपहर 2 से शाम 6 बजे तक राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

नई दिल्ली। 21 जून को भारत सहित दुनियाभर में पांचवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। देश में मुख्य आयोजन झारखंड की राजधानी रांची में हुआ जिसमें देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाग लिया। इस मौके पर पीएम मोदी ने कहा, 'योग अनुशासन है, समर्पण हैं, और इसका पालन पूरे जीवन भर करना होता है। योग आयु, रंग, जाति, संप्रदाय, मत, पंथ, अमीरी-गरीबी, प्रांत, सरहद के भेद से परे है। योग सबका है और सब योग के हैं।'

उन्होंने कहा, 'आज के बदलते हुए समय में इलनेस से बचाव के साथ-साथ वेलनेस पर हमारा फोकस होना जरूरी है। यही शक्ति हमें योग से मिलती है, यही भावना योग की है, पुरातन भारतीय दर्शन की है। पीएम ने कहा, 'अब मुझे आधुनिक योग की यात्रा शहरों से गांवों की तरफ ले जानी है, गरीब और आदिवासी के घर तक ले जानी है। मुझे योग को गरीब और आदिवासी के जीवन का भी अभिन्न हिस्सा बनाना है, क्योंकि ये गरीब ही है जो बीमारी की वजह से सबसे ज्यादा कष्ट पाता है।

इस वर्ष कार्यक्रम का मुख्य विषय 'हृदय के लिए योग' निर्धारित है। प्रधानमंत्री के साथ राजनेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों सहित रांची में धुर्वा स्थित प्रभात तारा मैदान में चालीस हजार आम लोगों ने योग किया।

अब आप आर्यावर्त केसरी के इन नियमित स्तम्भों में निरन्तर पढ़ते रहेंगे महत्वपूर्ण सामग्री

♦ ऐसे होते हैं आर्य, ♦ भारतवर्षीय गौशालाएं, ♦ प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा, ♦ आर्य जगत की महान विभूतियां ♦ आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), ♦ आर्य जगत के गुरुकुल, ♦ आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन, ♦ आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर, ♦ आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद, ♦ आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द, ♦ आर्य जगत के भजनोपदेशक, ♦ आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प, ♦ आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं और काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे अन्य कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ। साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साध्य, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं। मंगलकामनाओं सहित,

– डॉ० अशोक कुमार आर्य,
सम्पादक (9412139333)

विश्वभर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक समाचार-पत्र

आर्यावर्त केसरी

पाठक संख्या
100000
एक लाख

विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें-
डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
मोबा : 8630822099, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

मोहन चन्द अग्रवाल सेवा ट्रस्ट द्वारा आर्य समाज मन्दिर में आयोजित यज्ञ में उपस्थित कुंवर विनीत एवं उनके परिजन- केसरी

मोहन चन्द्र अग्रवाल को किया नमन

अमरोहा। आर्यसमाज में नगर के वरिष्ठ समाजसेवी स्व0 मोहन चन्द्र अग्रवाल की तृतीय पुण्यतिथि पर मोहन चन्द्र अग्रवाल सेवा ट्रस्ट द्वारा विश्व शान्ति यज्ञ किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष व श्री अग्रवाल जी के सुपुत्र कुंवर विनीत अग्रवाल एवं उनके परिजनों सहित नगर के अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों एवं आर्यसमाज के सभासदों ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान कीं व स्व0 मोहन चन्द्र अग्रवाल को नमन किया। वक्ताओं ने कहा कि वे एक अच्छी छवि के सरल सहज व्यक्ति थे तथा समाज के हर कार्य में विशेषकर गरीबों तथा बेसहारों की मद्द के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। उनके द्वारा किये गये अच्छे कर्मों को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

आर्य समाज अमरोहा में आयोजित राष्ट्र कल्याण यज्ञ में आहुति देते श्रद्धालु यजमान तथा यज्ञ कराते ब्रह्मा चैतन्य मुनि। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है, संगतिकरण देवपूजा व दान जिसके प्रमुख आधार हैं। यज्ञ से जीवन में सुख–शान्ति व समृद्धि आती है। –केसरी

महिला आर्य समाज स्टेशन रोड की अध्यक्षा बनीं सविता सिंघल

(सुनहरा तीर टाइम्स)

मुरादाबाद 21 मई (संवाददाता)। महिला आर्य समाज स्टेशन रोड का आज चुनाव हुआ जिसमें सविता सिंघल अध्यक्षा तथा कमलेश गोयल मंत्राणी कोषाध्यक्ष चुनीं गई।

महिला आर्य समाज स्टेशन रोड पर आज हवन यज्ञ के बाद कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसके बाद प्रधान सुदेश आर्य ने गत वर्ष के सहयोग के लिए सभी का धन्यवाद करते हुए निर्विघ्न कार्यवाही सम्पन्न कराई। आशा जैमिनी व शांति गौड़ ने चुनाव की प्रक्रिया कराते हुए सविता सिंघल को अध्यक्ष और कमलेश गोयल मंत्राणी कोषाध्यक्ष उषा गुप्ता यथावत रही।

कार्यकारिणी में कुसुम आर्य, मनोरमा, मीरा श्रोडिय, शन्नो गुप्ता, पूनम कत्याल, किरण सेठी, राजेश्वरी, सरोज, मालती, सुधा आदि को कमेटियां सौंपी गई है

ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित एक श्रेष्ठ पुस्तक

आर्य पर्व पद्धति

(केवल 20/- में उपलब्ध)

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

सम्पर्क- 9412139333

आज ही मंगाएं

अर्चना यज्ञ पद्धति

(केवल 12/- में उपलब्ध)

साथ ही अनेक अन्य महत्वपूर्ण संग्रहणीय पुस्तकें सूची मंगाएं

घर-घर पहुँचाएं ऋषि दयानन्द का कालजयी ग्रंथ

सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य- ५०/-, १५०/-

प्रकाशक : आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय

शुक्रताल (जिला- मुजफ्फरनगर) उ0प्र0- 251316

संस्थापक– स्वामी आनन्दवेश (ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक)

।। प्रवेश प्रारम्भ हैं ।।

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों, जैसे- अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, तथा कम्प्यूटर आदि का अध्ययन सुयोग्य अध्यापकों द्वारा कराया जाता है। प्रात: सायं हवन एवं यौगिक क्रियाएं करायी जाती हैं। मध्यमा स्तर इण्टरमीडिएट की परीक्षाएं परीक्षाएं उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद, लखनऊ, तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं पास होना अनिवार्य है। कृपया अपने बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर वार्ता करके प्रवेश दिलाएं। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

: आवश्यकता हैं :

विद्यालय में 2 रसोइया, एक वार्डन संरक्षक, एक क्लर्क तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली के मानदेय रुपये 96000/- वार्षिक पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है। शीघ्र संपर्क करें।

स्वामी आनन्दवेश
बलदेव नैष्ठिक
प्रबन्धक
9997437990

प्रेमशंकर मिश्र
प्राधानाचार्य
9411481624

आवश्यकता है

आर्यावर्त प्रिन्टर्स एवं आर्यावर्त केसरी समाचार पत्र समूह के लिए एक सुयोग्य

मैनेजर की

मासिक वेतन– रु. 10,000/– से 15,000/– तक

साथ ही,
आवश्यकतानुसार आवास व अन्य भत्ते भी।

केवल सुयोग्य उम्मीदवार ही सम्पर्क करें-

डॉ0 अशोक कुमार आर्य, सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत देश- विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु

प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमंत्रित हैं। कुल पद **: भारत हेतु २०,** तथा **विदेशों हेतु ५** हैं। **इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं ये हैं-** 1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3. यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्य समाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा हों, जिसकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरांत भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाइल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषाज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं0, मोबाइल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम- **'१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

-संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के अन्तर्गत

२९वां आर्य महासम्मेलन

25 से 28 जुलाई, 2019

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और आर्य समाज शिकागोलैंड की ओर से 29वां आर्य महासम्मेलन 25 से 28 जुलाई, 2019 तक शिकागो (अमेरिका) में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन का मुख्य विषय- 'वेद की ज्योति द्वारा अपने जीवन का प्रदीपन है।' इसके अन्तर्गत वैदिक परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति, निरंतर समरसता, नारी सशक्तिकरण जैसे उपविषय भी सम्मिलित होंगे।

इस अवसर पर योग एवं ध्यान सत्र, रोचक युवा सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आर्य समाज से सम्बन्धित सम-सामयकि विषयों पर चर्चा, सामाजिक कल्याण सम्बन्धित चर्चाओं और व्यस्कों तथा युवाओं के लिए गतिविधियों को शामिल किया जाएगा, जिससे कि हम सभी अपने भौतिक, नैतिक-आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए संसार का भी उपकार करते चलें। सम्मेलन मे भाग लेने वालों के लिए ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य है।

भारत से पहुंचने वाले आर्यजनों के लिए विशेष यात्रा का प्रबन्ध किया जाएगा। जो महनुभाव महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक हों वे कृपया अपना विवरण **aryasabha@yahoo.com** पर भेजें। सम्मेलन के बारे में अधिक जानकारी के लिए सभा की वेबसाइट **www.aryasamaj.com/ams** पर लॉगऑन करें।

सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान)
प्रकाश आर्य (मंत्री)
डॉ० सुखदेव सोनी (सम्मेलन संयोजक)
विश्रुत आर्य (प्रधान)
भुवनेश खोसला (मंत्री)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा — **आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका**

आवश्यकता है

वैदिक वानप्रस्थ आश्रम एवं गुरूकुल गढ़ी जिला ऊधमपुर (जम्मू कश्मीर) में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र संचालित करने के लिए एक सुयोग्य एवं सेवा भावी दम्पत्ति प्राकृतिक चिकित्सा की आवश्यकता है।

सम्पर्क सूत्र : **भारत भूषण आनन्द** (मोबा. 9419107788)

मजदूर महिलाओं को साड़ियां बांटते हुए अर्जुन देव चड्ढा व अन्य- केसरी

मजदूर महिलाओं को आर्य समाज ने बांटी साड़ियां

तंबाकू, गुटखे का सेवन नहीं करने का कराया संकल्प

अर्जुनदेव चड्ढा (9414187428)
कोटा।

आर्य समाज कोटा द्वारा मजदूर महिलाओं को साड़ियां बांटी गई तथा महिलाओं से तंबाकू, गुटखा आदि का सेवन नहीं करने का संकल्प कराया।

गोबरिया बावड़ी चौराहा स्थित मजदूर स्थल में दिहाड़ी मजदूरी हेतु कार्य करने आने वाली महिला श्रमिकों को साड़ियां बांटने के अवसर पर पूर्व जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर्य समाज रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, हरिदत्त शर्मा, रामचरण आर्य, राधावल्लभ राठौर, लालचंद आर्य, वेदमित्र वैदिक, किशन आर्य एवं मनीष राठौर आदि लोग उपस्थित रहे।

डॉ० 'व्यथित' 'जयशंकर प्रसाद स्मृति सम्मान' से अलंकृत

डॉ० अक्षत अशेष
बदायूँ (उ.प्र.)

के०टी० साहित्यिक विकास समिति, बीसलपुर (पीलीभीत) द्वारा दिनांक ६ जून, २०१९ को सरस्वती वि०म० इण्टर कॉलेज, बीसलपुर के सभागार में आयोजित अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह में डॉ० राम बहादुर 'व्यथित' को 'जयशंकर प्रसाद स्मृति सम्मान' से अलंकृत किया गया। उन्हें प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में डॉ० 'व्यथित' के गीत ''वीणा की झंकार है हिन्दी'' की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की गयी। डॉ० 'व्यथित' को इससे पूर्व भी देश के अनेक प्रान्तों में विविध अलंकरणों से सम्मानित किया जा चुका है।

ऋग्वेद — यजुर्वेद

।। ओ३म् ।।

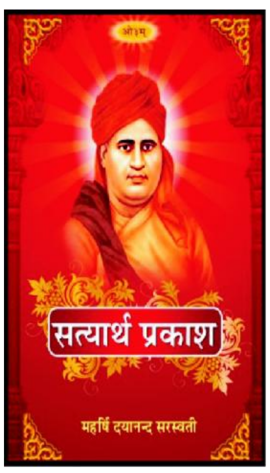

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद — अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश

का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित

साइज़ - 18 x 23 x 8

मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70

दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर **दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ**

आर्य युवक परिषद् का स्थापना दिवस मनाया

पाखण्ड अन्धविश्वास के विरूद्ध आर्य युवा करेंगे जनजागरण

देवेन्द्र भगत-प्रवीन आर्य
9958889970, 9911404423
नई दिल्ली।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्,नई दिल्ली के ४१ वें स्थापना दिवस पर आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली में ४ जून को ''आर्य युवा सम्मेलन'' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवा कर किया ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज समाज में बढ़ता हुआ पाखण्ड-अन्धविश्वास चिन्ता का विषय है जिससे युवाओं में धर्म के प्रति अरूचि हो रही है, आर्य युवा पाखण्ड और अन्धविश्वास के प्रति लोगों को जनजागृत करेंगे और धर्म के सच्चे वैदिक स्वरूप से अवगत करवायेगे, परिषद् युवा पीढ़ी को संस्कारित व चरित्रवान बनाने के लिए व्यापक अभियान चलायेगी, उन्होंने कहा कि चरित्र निर्माण, देश भक्त युवा पीढ़ी का निर्माण आज राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् इस ग्रीष्मकालीन अवकाश में १८ चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन विभिन्न स्थानों पर कर रही है जिससे संस्कारवान युवा शक्ति का निर्माण हो सके ।

इस अवसर पर ओम सपरा, प्रवीन आर्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्रीमती कविता आर्या, रमेश बेदी, अशोक नागपाल गुडडीदेवी जाटव, जयप्रकाश शास्त्री व कुंवरपाल शास्त्री आदि उपस्थित थे। आर्य समाज के मंत्री देवेन्द्र भगत ने व महेन्द्र भाई ने समारोह का कुशल संचालन किया । कर्मठ कार्यकर्ता सुदेश भगत, रामचन्द्र सिंह व हरिश्चन्द आर्य का ''आर्य श्रेष्ठी आवार्ड'' से अभिनन्दन किया गया ।

प्यारा ऋषि

महर्षि दयानन्द की सचित्र जीवनगाथा
साभार- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली

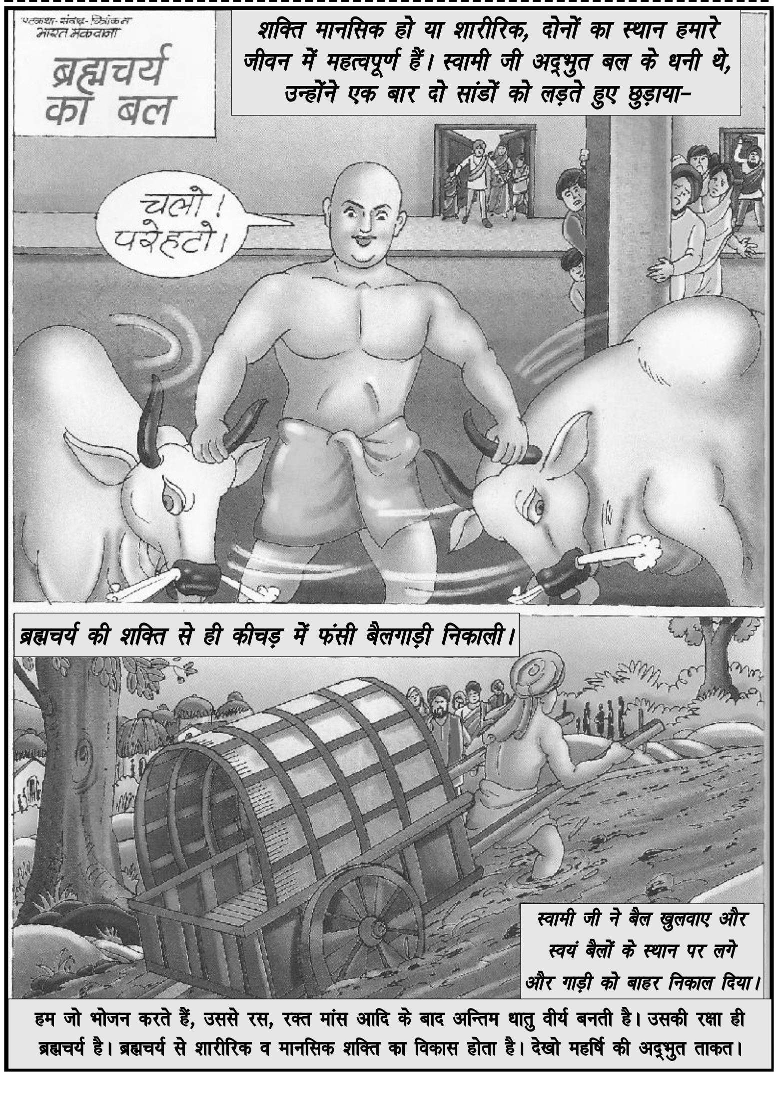

सामाजिक सरोकार : पक्षियों के लिए बांधे परिण्डे

कोटा। आर्य समाज कोटा द्वारा अपने सामाजिक सरोकार के कार्यो की श्रृंखला के अंतर्गत पक्षियों के लिए कोटा में बूंदी रोड़ स्थित आजमगढ़ साहिब गुरूद्वारे में जाकर आर्य समाज के पूर्व जिला प्रधान अर्जुनेदव चड्ढा के नेतृत्व में डीएवी की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम, आर्यावर्त केसरी समाचार पत्र के संपादक डॉ. अशोक कुमार आर्य, आचार्य शोभाराम आर्य एवं वेदमित्र वैदिक ने पक्षियों के लिए परिंडे बांधे।

इस अवसर पर श्री चड्ढा ने कहा कि आर्य समाज प्राणी मात्र के भले के लिए कार्य करने वाली संस्था है, इस भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए परिण्डे

बांधना पुण्य का कार्य है। परिण्डे बांधने के उपलक्ष्य में आचार्य ज्ञानी गुरूनाम सिंह जी ने कहा कि परोपकार के कार्य करना ही सबसे बड़ा धर्म है।

त्रिदिवसीय वेद प्रचार एवं यज्ञोत्सव में उपस्थित यजमान श्रद्धालुजन- केसरी

त्रिदिवसीय वेद प्रचार से झूम उठे ग्रामवासी

कुलदीपक आर्य के आईएएस में चयन पर दी बधाई

पं. दयाराम वेदपथी (9837884200)
नगला दुबे, बदायूँ (उ.प्र.)।

कोतवाल जयप्रकाश यादव उनकी पत्नी सुधा आर्या, पिता आनन्द सिंह एवं भ्राता सत्य प्रकाश सिंह यादव के सत्प्रयासों से उनके निवास स्थान ग्राम नगलादुबे में तीन दिवसीय भव्य वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पधारे विद्वानों एवं गणमान्य नागरिकों ने वेद कथा एवं सत्संग के आयोजक परिवार को सुभाशीष व बधाईयां दीं। ग्राम नगला दुबे के सभी निवासी इस सत्संग महोत्सव में खुशियां मना रहे थे क्योंकि कोतवाल जय प्रकाश यादव आर्य के पुत्र कुलदीपक सिंह आर्य ने प्रथम प्रयास में ही आईएएस की परीक्षा में अभिनन्दनीय सफलता प्राप्त की है। इसके लिए सभी ने श्री यादव को बहुत बधाई दीं।

ज्ञातव्य है कि श्री जय प्रकाश यादव इससे पहले भी दो बार अपने ग्राम में भव्य वेद प्रचार करा चुके हैं तथा उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना भी की है।

वेद प्रचार उत्सव में आचार्य वेदपथी ने वेद मंत्रों की सरल व्याख्या के साथ ही यज्ञ की महत्ता भी बताई। वैदिक जयघोष एवं गायत्री मंत्र युक्त फ्लैक्स भी वितरित किये गये। कार्यक्रम में परिजनों सहित भारी संख्या में ग्राम व क्षेत्रवासी उपस्थित थे।

शपथ ग्रहण पर सर्वकल्याण की भावना से किया यज्ञ

पं. दयाराम वेदपथी (9837884200)
बदायूँ (उ.प्र.)।

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध आचार्य विशुद्धानंद जी की पुत्रवधु एवं आचार्य मेधाव्रत की धर्मपत्नी डॉ0 प्रतिभा मिश्रा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शपथ ग्रहण के उपलक्ष्य में सर्वकल्याण की कामना से यजमान बनकर अपनी सखियों के साथ देवयज्ञ का भव्य आयोजन किया। यह यज्ञ श्रीमद्दयानंद वैदिक संस्कारशाला, वैदिक क्रान्तिकुंज के संस्थापक पं0 दयाराम वेदपथी व पं

राजेन्द्र आर्य ने पावन वेद ऋचाओ के गुंजन के साथ संपन्न कराया। इस आयोजन में विष्णु प्रकाश मिश्र, कामदेव पाठक, अम्बा सहाय, महाराज सिंह व तिलक सिह आदि सहित अनेक माताएं, बहनें व भद्रजन उपस्थित रहे।

गीता भारती स्कूल में व्यक्तित्व विकास शिविर में सहभागिता करतीं कन्याएं– केसरी

आर्य कन्या व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

- बेटियों के निर्माण से ही मजबूत समाज का निर्माण होगा -डा.महेन्द्र नागपाल (पूर्व विधायक)
- बालिकाओं से ही घर की शोभा है -योगेश वर्मा, उपमहापौर दिल्ली

डॉ. अनिल आर्य (मोबा. : 9810117464)
नई दिल्ली

दीप प्रज्वलन करते अनिल आर्य के साथ अतिथि– केसरी

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद्, दिल्ली के तत्वावधान में आठ दिवसीय 'आर्य कन्या व्यक्तित्व विकास शिविर' का गीता भारती स्कुल, अशोक विहार, फेज-२ में भव्य आयोजन किया गया। शिविर में १५० बालिकाओं ने योगासन, लाठी, जूडो-कराटे, लेजियम, डम्बल, स्तूप, आत्मरक्षा शिक्षण, नैतिक शिक्षा, भाषण कला, नेतृत्व क्षमता, सन्ध्या यज्ञ, भजन व वैदिक सिद्वान्तों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक डॉ. महेन्द्र नागपाल ने कहा कि बेटियों के निर्माण से ही मजबूत समाज का निर्माण होगा। बेटी यदि शिक्षित होगी तो राष्ट्र का भविष्य भी सुरक्षित रहेगा।

उपमहापौर योगेश वर्मा ने कहा कि बेटियों से ही घर की शोभा होती है हमें उन्हें पूरा सम्मान व स्नेह देना चाहिये।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा बालिकायें ही किसी भी राष्ट्र का आधार है। महारानी लक्ष्मी बाई, दुर्गा आदि इतिहास के अनमोल उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि सुंस्कृत नारी ही सुंस्कृत भावी सन्तान का निर्माण कर सकती है,इसलिये इन चरित्र निर्माण शिविरों का जीवन में विशेष महत्व है।

इस अवसर पर समाजसेवी कमल मोंगा, प्रि.राजरानी अग्रवाल, प्रवीन आर्या, संगीता आर्या, मधु बेदी, समाजसेवी बृजमोहन गर्ग, ओम सपरा, आचार्य महेन्द्र भाई, यश चौधरी, सत्यपाल गांधी, प्रेम सचदेवा, यशोवीर आर्य, जीवनलाल आर्य, अन्जु जावा, अनिता कुमार, नरेन्द्र कस्तुरिया, डिम्पल भण्डारी, उषा आहुजा, विजय हंस व देवेन्द्र गोयल आदि उपस्थित थे ।

व्यायामाचार्य सौरभ गुप्ता, प्रगति, पिंकी व करूणा ने प्रशिक्षण दिया।

विश्व पर्यावरण सप्ताह के अंतर्गत आई.एल. टाउनशिप में यज्ञ

राधाबल्लभ राठौर (9352602833)
कोटा (राजस्थान)

यज्ञ में आर्यनेता अर्जुनदेव चढ्डा के साथ राधावल्लभ राठौर व अन्य– केसरी

आर्यनेता व वरिष्ठ समाजसेवी अर्जुनदेव चड्ढा की प्रेरणा एवं कुशल नेतृत्व में पर्यावरण शुद्धि हेतु २ जून २०१९ को एक वृहद् यज्ञ का आयोजन आईएल टाउनशिप के परिसर में किया गया।

इस अवसर पर आर.सी. आर्य ब्रह्मा तथा यजमान राकेश चड्ढा सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। डॉ. कृष्णदेव शास्त्री (पानीपत) ने यज्ञ की महिमा बताई। आज के युग में तीव्र गति से बढ़ते प्रदूषण के निवारण हेतु हर घर में यज्ञ के आयोजन पर बल दिया।

इसी क्रम में ६ जून को भी आर्य समाज महावीर नगर के प्रधान राम चरण आर्य के ब्रह्मत्व में पर्यावरण संरक्षण एवं प्राणीमात्र के कल्याण के लिए यज्ञ का आयोजन किया गया।

आर्य समाज महावीर नगर कोटा प्रत्येक रविवार को विभिन्न पार्कों में यज्ञ का आयोजन कर पर्यावरण शुद्धि में अपनी भूमिका अदा कर रहा है।

इस बेला में वार्ड पार्षद डॉ. विवेक राजवंशी, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, राकेश जैन, प्रतिभा दीक्षित व राधा बल्लभ राठौर आदि उपस्थित थे।

वधु चाहिए

एक प्रतिष्ठित व्यावसायी (मारूति सुजुकी एजेंसी) परिवार के अग्रवाल (गोयल) वैश्य एम.बी.ए. (एकाउण्टेंसी एण्ड बिजनैस), बी.टैक. नवयुवक 29 वर्ष, 5 फिट 7 इंच, निजी पब्लिक स्कूल हेतु सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित एवं सुयोग्य वधु चाहिए। सम्पर्क सूत्र- बी.एल. गोयल, बरोग न्यू, हॉस्पिटल रोड, सोलन (हिमाचल प्रदेश)-173212, मोबा. : 9418525876

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि- 12.01.1992, कद- 5 फुट 5 इंच, शिक्षा-B.Tech. (Com. Sc.) NIT, Raipur से, Multinational Company में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत् प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारवान युवती चाहिए। सम्पर्क- 9412865775, 9412135060

अग्रवाल आयु- 40 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, आर्य परिवार संस्कारित, स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु संस्कारवान वधू चाहिए। जाति बंधन नहीं। (विधवा भी मान्य)। **सम्पर्क सूत्र**- 09457274984

आर्य परिवार संस्कारित, यमुनानगर (हरियाणा) निवासी, जन्म 19 जुलाई 1982, कद 6 फुट, शिक्षा बी0ए0, अपना मकान व दुकान, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्य समाज परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 07404136582, 08607200203

गोयल वैश्य आर्य परिवार संस्कारित, जन्मतिथि 02 फरवरी 1985, कद 5'- 5'', बी0ए0, निजी आवास तथा व्यापार (विवाह के एक वर्ष के अन्दर ही आपसी सहमति से तलाकशुदा) युवक हेतु संस्कारित वधू चाहिए। **सम्पर्क** : देवेन्द्र कुमार गोयल, मण्डी चौब, अमरोहा मोबा. : 9319996060, 7017365004

वर चाहिए

23 वर्षीय भाटी राजपूत कन्या हेतु, जिसकी सम्पूर्ण शिक्षा कन्या गुरुकुल में सम्पन्न। सिलाई, कटाई तथा कम्प्यूटर में आई.टी.आई. प्रमाण पत्र प्राप्त तथा शास्त्री (हिन्दी संस्कृत) अंतिम वर्ष की परीक्षा दी है, रिजल्ट प्रतीक्षित है, एक सेवारत अथवा स्वरोजगारी सजातीय वर की आवश्यकता है। सम्पर्क सूत्र : 8859946499

वैदिक विचारों की 26 वर्षीय संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा- बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरू में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

आज ही मंगाएं तथा अधिक से अधिक संख्या में विभिन्न अनुष्ठानों में बांटे आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह पुस्तिका

जिसमें हैं यज्ञ की महिमा संबंधी १०८ प्रश्नों के उत्तर

पृष्ठ : 32, मूल्य : 10/- आज ही मंगाएं (मोबा. 9412139333)

कह हटेगी धारा-370

यूँ तो कश्मीर से सम्बंधित अलगाववादी संवैधानिक धारा ३७० व ३५ए को हटाने की मांग दशकों पुरानी हैं तथा वर्तमान सत्ताधारी दल इनको हटाने के लिए प्रारम्भ से ही कृत संकल्पित है. इस सम्बंध में एक याचिका भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय में लंवित है। हाल ही में सरकार की ओर से कहा गया है कि धारा ३७० व ३५ए का हटाया जाना न सिर्फ कश्मीर समस्या के समाधान बल्कि वहाँ व्याप्त भेदभाव को समाप्त कर कश्मीर समस्या के सम्पूर्ण समाधान व अलगाववाद को समाप्त करने में कारगर कदम होगा और हम २०२० तक इस लक्ष्य को पूरा कर लेंगे। इतना कहने पर जहां एक ओर देशभर में एक आशा की किरण जागी कि चलो! शायद कश्मीर समस्या का समाधान अब निकट ही है, तो वहीं दूसरी ओर, कश्मीरी अलगाववादियों के पक्षधर पूर्व मुख्यमंत्री व घाटी के प्रमुख राजनेता फारुख अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला तथा महबूबा मुफ्ती इत्यादि अलगाववादी नेताओं के बयानों ने देश की एकता और अखंडता पर गहरी चोट करते हुए घाटी में बहुसंख्यक मुसलमानों व वहां के अल्पसंख्यकों के बीच गहरी दरार पैदा कर दी। उन्होंने धमकी भरे स्वरों में जिस प्रकार भारत जैसे महान व दुनिया के सर्वोच्च लोकतंत्र की संप्रभुता पर सीधा हमला करते हुए संविधान के अनुच्छेद ३७० व ३५ए को हटाने पर जम्मू कश्मीर के भारत से अलग हो जाने की धमकी देने का जो दुस्साहस किया, वह किसी भी देश भक्त के लिए बेहद कष्टकारक था. उनके द्वारा एक नहीं अनेक भाषणों में कश्मीर घाटी के अलगाववादी वातावरण में जिस प्रकार तीखा जहर घोला गया उससे न सिर्फ देशद्रोहियों के हौसले बुलंद हुए, आतंकवादियों और अलगाववादियों को प्रोत्साहन मिला बल्कि लगे हाथ पाकिस्तान ने भी उनके इन बयानों पर तालियां बजाते हुए एक बार पुनः कश्मीरी राग अलाप डाला।

ध्यान रहे ये वही राजनेता हैं जिन्हें भारत के कर दाताओं के खून पसीने की कमाई से दिये गए कर में से वेतन, भत्ते, गाडी-बंगले, पेंशन व सुरक्षा के साथ अनेक प्रकार की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सुविधाएं मिलती हैं। भारत सरकार द्वारा जारी पासपोर्ट ही इनकी पहचान है। किन्तु फिर भी ये राजनेता स्थानीय जनता को सांप्रदायिक आधार पर भड़काकर वोट बटोरने का जो बेहद ओछा व गहरा षडयंत्र रचते हैं वह न सिर्फ चुनाव आचार संहिता का गंभीर उल्लंघन है बल्कि देश की संवैधानिक संस्थाओं, संसद व संविधान पर भी सीधा हमला है। संपूर्ण भारत इन नेताओं की भारत विरोधी धमकियों से बेहद आहत है। किन्तु फिर भी देश को तोड़कर अलग विधान, अलग निशान व अलग प्रधान की बात करने वालों के विरुद्ध, मात्र एक राजनैतिक दल को छोड़कर, किसी भी अन्य राजनैतिक दल या उनके कथित गठबंधन के किसी भी सदस्य ने आज तक एक शब्द तक नहीं बोला कि देश तोड़ने की बात कहने का उनका दुस्साहस कैसे हुआ?आखिर क्यों? हम जानते हैं कि ऐसी ही एक चुप्पी ने एक बार भारत विभाजन को जन्म दिया था। स्वतंत्रता से पूर्व काँग्रेस के एक अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने जब वंदेमातरम का विरोध किया तब तत्कालीन नेताओं ने उसका मुखर विरोध कर उसे गाने को विवश किया होता तो न तो माँ भारती के टुकड़े होते और न ही आज शायद ये दिन देखने पड़ते। खैर! इन नेताओं की देश विरोध पर चुप्पी का कारण देश की जनता समझ ही रही है। कोई राजनेता चुनावों की घोषणा के बाद भी यदि यह कहने का दुस्साहस करे कि **'ना समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिंदुस्तान वालों, तुम्हारी दास्तां तक नहीं रहेगी दास्तानों में'** और दूसरा कहे कि 'हमारा तो अलग विधान, अलग निशान, व अलग प्रधान होगा' तो क्या इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में यूं ही नजरंदाज किया जा सकता है।

अतिथि सम्पादकीय- विनोद बंसल, राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप, ३२६, द्वितीय तल, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-६५ मो. 9810949109

एक मुट्ठी आटे में-वेद प्रचार

डॉ० बिजेन्द्र पाल सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की, वेद प्रचार तथा शास्त्रर्थ किये, पत्र पत्रक, पुस्तकें, लिखी अन्धविश्वास व पाखण्डों को दूर करने के प्रयास किये। सत्यार्थ प्रकाश उनकी लिखि एक ऐसी पुस्तक है जिसने सोते हुए भारतीयों को जगा दिया और आज भी सबको प्रेरणा दे रही है। आर्य समाज विचारों की क्रान्ति का मंच है जहां वैदिक धर्म व भारतीय संस्कृति का प्रकाश जन-जन के हृदय में अन्धकार की छाया का प्रतिकार कर रहा है। आर्य समाज की प्रेरणा से अनेक क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता हेतु बलिवेदी पर न्यौछावर हो गये ऐसे अनेक वीर पुरूष हुए जिन्होंने वेद प्रचार हेतु अनेक यातनाएं सही दु:ख उठाए कष्ट उठाए, राष्ट्र निर्माण हेतु अपने गरीब परिवारों को छोड़ दिया फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

ऐसे ही पण्डित दौलतराम जो आगरा निवासी ब्राह्मण थे आर्य समाजी थे। बच्चों को पढ़ाने व वेद प्रचार करने की अधिक लगन थी। उनका अपना परिवार अत्यन्त निर्धन था। अपना घर छोड़ वह झांसी पहुंच गए। वहां पाठशाला व अनाथालय खोला, जहां बिना कोई शुल्क लिए बच्चों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया। इस हेतु वहां के निवासियों अनाथालय के संचालन हेतु प्रतिदिन एक मुट्ठी आटा घड़े में डालना आरम्भ कर दिया। पण्डित दौलतराम बच्चों को पढ़ाने का कोई शुल्क नहीं लेते थे। उन्होंने परिवार को आर्य समाज के सत्संग का आयोजन भी आरम्भ कर दिया। यह देखकर छावनी के अनेक सैनिक भी सत्संग में आने लगे कुछ सैनिकों ने पण्डित दौलतराम से सैनिक छावनी में भी सत्संग करने की प्रार्थना की। वहां छावनी में पण्डित दौलतराम ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास की कथा की कुछ आर्य समाज के विरोधियों ने इसकी शिकायत छावनी के अधिकारियों से की। पुलिस ने पण्डित दौलतराम पर दफा 108 का अभियोग चला दिया।

न्यायाधीश श्री जे.सी. स्मिथ थे उन्होंने 29.09.1908 को इस मामले में निर्णय करते हुए पण्डित दौलतराम को उत्तम व्यवहार के लिए झांसी के प्रतिष्ठित नागरिकों द्वारा नेक चलनी की दो जमानतें देने का अथवा एक वर्ष के कठोरतम कारावास का दण्ड दिया। न्यायाधीश का कहना था कि पण्डित दौलतराम बच्चों से कोई शुल्क नहीं लेता। अच्छे कपड़े पहनता है, उसने कुछ व्यक्तियों को इसलिए राजी किया है कि वह अपने घरों में रखे मटकों में प्रतिदिन एक मुट्ठी भर आटा डाल दिया करें उसके अनुसार प्रति सप्ताह तैतीस सैर आटा एकत्र होकर उसे मिल जाता है।

झांसी के समाचार पत्रों में जिला मजिस्ट्रेट स्मिथ के इस निर्णय की अत्याधिक आलोचना की थी। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्य समाजी अपनी लगन व धुन के पक्के होते थे उन्होंने अपने घर परिवार की भी परवाह नहीं की। वह संसार की भलाई के लिए ही जो परोपकार के लिए यातनाएं सहीं, जेल गए आर्य समाज का कार्य संसार के उपकारार्थ ही तो है। सत्यासत्य के निर्णय के लिए, सत्यार्थ प्रकाश के लिए हैं। उनसे प्रेरणा लें। आज तो हम स्वतंत्र हैं। वह कठिन परिस्थितियां भी नहीं हैं। प्रचार कार्य और तीव्र करें।

चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा
मोबा. : 8979794715

पर्यावरण बचायें, हवन यज्ञ करायें, वृक्ष लगायें

श्रद्धानन्द योगाचार्य

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता है, किंतु हवन-यज्ञ अधिकाधिक प्रचुर मात्रा में ने होने से कागजों पर जो सरकारी आंकड़े चलाये जाते हैं, उनसे पूर्ण लाभ नहीं होता है।

अत: प्रचुर मात्रा में गोघृत, गुग्गुल आदि से हवन-यज्ञ द्वारा पर्यावरण शुद्ध किया जावे। क्योंकि जो मनुष्य अपने शरीर से जितना दुर्गन्ध फैलाता है, उसे उसी अनुपात में हवन-यज्ञ द्वारा सुगन्ध फैलानी अनिवार्य है। इसी प्रकार वृक्षारोपण करने से जलवायु परिवर्तन को रोका जा सकता है। इसलिए बरगद, पीपल, नीम आदि फलदार वृक्षों को लगाकर उनकी रक्षा भी करें। वट अमावस्या से भी यही तात्पर्य है। इससे तापमान में कमी लाई जा सकती है।

अत: हवन-यज्ञ करते हुए वृक्षारोपण वक्फशत्रु सम्पत्ति जमीनों पर अवश्य करें।

-बजरिया कायमगंज
फर्रुखाबाद (उ०प्र०)

जनवाणी

आर्यावर्त केसरी ऐसे ही नहीं होगी एक लाख पाठक संख्या

महोदय,

16 मई के अंक में विज्ञापन पढ़ा कि पाठक संख्या एक लाख आर्यावर्त केसरी बहुत अच्छी सोच है, क्योंकि इससे आर्य समाज का विस्तार होगा, और तब तो यह आर्य समाज का सबसे बड़ा अखबार हो जाएगा।

मेरा मानना है कि लक्ष्य तब पूरा होना संभव होगा, जब अधिकांश आर्य समाजें नित्य खुलें। यदि प्रात: संभव न हो, तो सायंकाल दो घंटे के लिए खुलें। जब दुकान खुलेगी, तब ग्राहक भी आने लगेंगे। दो घंटों में आने वालों की इच्छानुसार कार्यक्रम निर्धारित किये जा सकते हैं।

अखबार को पाक्षिक की जगह साप्ताहिक करने का प्रयास करें।

-इन्द्रदेव गुलाटी,
संस्थापक-
नगर आर्य समाज
१८/१८६,
टीचर्स कालोनी
बुलन्दशहर (उ.प्र.)

ग्रीष्म ऋतु में नींबू

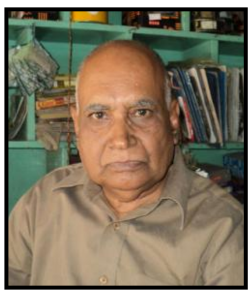

कृष्णमोहन गोयल

सदियों से ग्रीष्म ऋतु में अधिकांश गृहणियां नींबू का प्रयोग अवश्य करती रही है। ग्रीष्म ऋतु में प्रात: नींबू पानी का सेवन करने से स्वास्थ्य उत्तम रहता है। नींबू का प्रयोग प्रत्येक आहार के उपरांत करने से संक्रमणात्मक रोगों को विराम मिलता है, जैसे अपच, उल्टी, जी मिचलाना, गैस समस्या आदि।

ग्रीष्म ऋतु में सफर के दौरान नींबू सबसे उत्तम औषधि है। सफर के दौरान प्राय: आहार की गुणवत्ता उचित नहीं रहती, इसलिए पेट के रोग ज्यादा परेशान करते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में यदि आप नींबू पानी, नमक आदि का सेवन प्रतिदिन करेंगे, तो इस प्रक्रिया से पसीना एवं पेशाब ज्यादा आएगा, जिससे शरीर रोगों से मुक्त होगा। गुर्दे भी रोगमुक्त रहेंगे।

उल्लेखनीय है कि नींबू प्रकृति की अनुपम देन है तथा ग्रीष्म ऋतु में आसनी से मिलता है। यह दादा-दादी के नुस्खों की सर्वश्रेष्ठ दवा है।

-बाजार कोट, अमरोहा
९९२७०६४१०४

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत में करें वार्तालाप : वदतु संस्कृतम्-3

भोजनार्थम् आगच्छतु।	भोजन के लिए आइए।
परिवेशयतु/ददातु।	परोसिए/दीजिए।
पर्याप्तम/मा*स्तु।	बस/नहीं चाहिए।
स्वल्पं स्वीकरोतु/खादतु	थोड़ा सा लीजिए/खाइए।
.........आवश्यकम् (लवणम्)	.......चाहिए। (नमक)
स्वल्पं ददातु।	थोड़ा दीजिए।
किं दधि अस्ति?	क्या दही है?
भोजनं बहु स्वादिश्टम् अस्ति	भोजन बहुत स्वादिष्ट है।
इतो*पि स्वीकरोतु।	और लीजिए।
उदरं पूर्णम्।	पेट भर गया।
रोटिका - रोटी	लवणम् - नमक
सूप: - दाल	दधि - दही
ओदनम् - चावल	मरीचिका - मिर्च
षाकम् - सब्जी	मिष्ठात्रम - मीठा
पूरिका - पूरी	पायसम् - खीर
स्थालिका - थाली	चमस: - चम्मच
चशक: - गिलास	दर्वी - कड़छी

महान स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर

हरिश्चन्द्र आर्य

थे एक वीर सावरकर जो मर कर भी अमर हुए जग में।
साहस से सागर लांघ लिया-शूल बने अंग्रेजी पग में।।
ऐसे नर पुंगव ही धरती पर-विजय केतु फहराते हैं।
अपने जीवन की ज्योति जला जीवन ज्योतित कर जाते हैं।।
तेजस्वी वर्चस्वी ओजस्वी वीर विनायक दामोदर सावरकर।
नमन उन्हे मेरा शतवार।।
जिसको न जला पायी ज्वाला-डूबा न कभी ये पानी में।
अंगारों से श्रंगार किया फूलों से भरी जवानी में।।
भारत मां के तुम सपूत थे क्रान्ति यज्ञ के अग्रदूत थे।
त्याग तथा बलिदान समन्वित पावनता से तप: पूत थे।।

वीर सावरकर का जन्म कृष्ण पक्ष 6 वैशाख विक्रमी सम्वत 1940 तदनुसार 28 मई 1883 को भंगुर ग्राम नासिक भारत में हुआ था अपने परिवार में ये तीन भाई थे। परन्तु वन्दनीया मातृ भूमि के प्रति समर्पित रहते हुए उनके यह उदगार कितने हृदय स्पर्शी हैं- ''तीन ही क्यों यदि हम सात भाई भी होते तो भी सभी पुष्पों की की तरह भारत माता के चरणों पर न्यौछावर होकर बलिदान कर अमर धानुष बन जाते।'' वीर सावरकर को तो जैसे घुट्टी में ही, राष्ट्र के प्रति पूरी निष्ठा से राष्ट्र समर्पण की भावना पिलाई गई थी।

क्रान्ति ज्योति नूतन विसरायी-स्वतन्त्रा की अलख जगायी।
स्वातन्त्र वीर सावरकर तुमने अग्रेजों की नींद उड़ायी।।

विजयदशमी पर दिए गये संदेशों में वीर सावरकर ने कहा था ''यह ठीक है कि हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है फिर भी जिस प्रकार इन्द्रधनुष का सौन्दर्य बहु रंगी होने से बहुगुणित हो जाता है, उसी प्रकार भारत के भविष्य का आकाश भी उतना ही सुनहरा हो सकता है। यदि मुस्लिम, पारसी, यहूदी व अन्य संस्कृतियों के सर्वोत्तम गुणों को हम ग्रहण कर लेगें। क्या आज के इस परिदृश्य में ऐसी कोई भाई चारे की भावना दिखाई पड़ती है? इंडिया हाऊस लन्दन के सहवासी हर रात 'शुभरात्रि' के रूप में सामूहिक स्वर में दोहराते थे-

एक देव, एक देश, एक भाषा।
एक जाति, एक जीव, एक आशा।

वीर सावरकर को एक जन्म में ही दो आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया था। इस पर चुटकी लेते हुए उन्होंने कहा था मैं न्यायाधीश महोदय को कम से कम इस बात के लिए बधाई देता हूँ कि उन्होंने एक जीवन में ही दो आजीवन कारावास का दण्ड देकर हिन्दुओं के पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मान लिया है। अपनी मातृभूमि को आततायी अंग्रेजी प्रशासन से मुक्ति दिलाने वाले सभी वीर वीरांगनाओं को हम नमन करते हैं। वस्तुत: अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की पूर्ण स्वाधीनता के लिए क्रान्तिकारी अभियान चलाने वाले सावरकर पहले भारतीय थे।

लन्दन स्थित इंडिया हाऊस में स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्ण जयन्ती समारोह पूर्वक सिंह गर्जना के उल्लास के साथ मनाने वाले वीर सावरकर पहले महारथी थे। '1857 की क्रान्ति' का इतिहास लिखकर प्रकाशित करने वाले वे पहले भारतीय थे। अस्पृश्य कही जाने वाली जातियों के परिवारों में होली, दीपावली, दशहरा प्रमुख पर्वो पर सपत्नीक जाकर वे विश्व बन्धुत्व का संदेश देते थे- 'इन्हें स्नेह प्रेम सौजन्य से आबद्ध करो'।

अण्डमान निकोबार के कारागृह में रहते हुए अपने कवि कर्म को निभाते हुए वह दीवारों पर पंक्तिया उकेरा करते थे। आईये मन को झकझोरने वाली उनकी कुछ पंक्तियों का भाव समझकर हम भी अपने कर्तव्यों के निर्वहन की शपथ लें-

काटेगें हम माँ के बंधन, काटेंगे यह जीवन वाती इसी हेतु निवटेगी।
बाटेंगे हम सब माँ के दु:ख, यह पूत प्रतिज्ञा कभी नहीं छूटेगी।।
अपनी प्रतिमा से माँ की प्रतिमा, अपनी तरूणाई माँ की शक्ति बनेगी।
वह ही शिक्षा माँ के सपने पूरे चमकें, वही दीक्षा जो दुश्मन से जूझेगी।।

हे मातृ भूमि यह मन अर्पित है तुझको,
वाणी वैभव सब विद्या तुझे समर्पित।
है विषय वांगमय की अनन्य तू जननी,
यह मेरी नवरस काव्य तुझे ही अर्पित।।

भारत माता की जय, वीर सावरकर की जय हो।

अधिष्ठाता- उपदेश विभाग, काली पगड़ी, अमरोहा

आओ- किसी का सहयोग करें

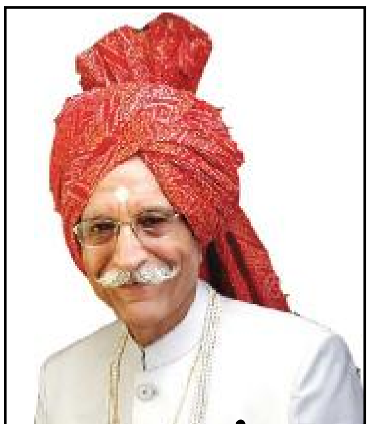

महाशय धर्मपाल

ऐसे ही बैठे-बैठे मन में विचार आया कि यूं तो हम रोजाना ही सड़क से गुजरते हुए देखते हैं कि कुछ अभागे गरीब परिवार के बच्चे मैले-कुचैले कपड़े पहने सड़क पर भीख मांग रहे होते हैं। न ही वे पढ़ने जा पाते हैं, न ही वे अच्छा कपड़ा पहन पाते हैं, न ही उनके पैरों में चप्पल या जूते होते हैं और उनका यह सिलसिला पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। जब दिल्ली जैसे शहर में यह स्थिति है, तो देश के अन्य गरीब जिलों और उनके गांवों की स्थिति क्या होगी।

एक दिन बैठे-बैठे मेरे मन में विचार आया कि आखिर हम इनकी सहायता कैसे कर सकते हैं। मेरे मन में दान की प्रवृत्ति सदा से रही है। भगवान ने मुझे दिया है तो मैं आगे क्यों न दूं?पर हर कार्य की एक सीमा तो होती ही है। कुछ लोग कितना सहयोग कितने लोगों को कर सकते हैं। यह सोचकर ही मेरे मन में यह विचार पैदा हुआ कि क्यों न प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ सहयोग करे। विचार यह था कि हम सबके घरों में ऐसा बहुत सा सामान होता है, जो हमारे कुछ भी काम नहीं आ रहा होता, तो क्यों ने हम उस सामान को किसी ऐसे जरूरतमंद तक पहुंचायें, जिसको इसकी हमसे ज्यादा जरूरत हो। ऐसा विचार आते ही हमने इस कार्य को 'सहयोग' के नाम से और परमात्मा के आशीर्वाद से शुरु किया है और यह अच्छी तरह से चल रहा है।

मैं सभी महानुभावों से यह प्रार्थना करता हूं कि आपके पास जो कुछ भी कपड़ा, जूता, खिलौना, पढ़ाई की किताब इत्यादि ठीक हालत में हों, आप उसे हमारी 'सहयोग' की टीम को भेजें, हम उसे ठीक करके और अच्छी पैकिंग करके दिल्ली और देश भर के उन जरूरतमंदों तक पहुंचाएंगे, जिनको इनकी अधिक आवश्यकता है। आप अपना सामान देते समय यह जरूर ध्यान रखें कि सामान फटा-टूटा और पुराना न हो। सामान ठीक हालत में हो। दूसरी बात यह कि वस्त्र दें, तो साफ धोकर और प्रैस करके ही दें, ताकि तत्काल किसी के काम आ सके।

ऐसा न समझें कि दान बहुत अमीर व्यक्ति ही कर सकता है। वास्तव में दान तो हर वह व्यक्ति कर सकता है, जिसके मन में किसी की सहायता करके उसको ऊंचा उठाने की इच्छा हो। आओ हम सब मिलकर 'सहयोग' में सहयोग करें।

''हम हर किसी की मदद नहीं कर सकते, लेकिन हर कोई किसी की मदद कर सकता है।''

नोट : अगर आप इसमें अपना सहयोग देना चाहते हैं, तो अपने नजदीकी आर्य समाज मन्दिर में जाकर भी सहयोग दे सकते हैं तथा अपने एंड्रायड मोबाइल फोन पर गूगल प्ले स्टोर से आर्य लोकेटर (The Arya Locator) की ऐप डाउनलोड करके भी सर्च कर सकते हैं, या इस नं0 9540050322 पर सम्पर्क कर सम्पूर्ण जानकारी ले सकते हैं।

सप्त पदी : सात कदम मेरे संग

रतनलाल राजोड़ा एडवोकेट

सप्तपदी में विवाह के मुख्यतः सात उद्देश्य बताए गए हैं। विवाह-संस्कार के समय वर-वधू पवित्रतम् मंत्रों द्वारा प्रतिज्ञाएँ करते हैं। सप्तपदी के सात पदों में पहला कदम अन्न के लिए, दूसरा बल के लिए, तीसरा धन के लिए, चौथा सुख के लिए, पाँचवाँ परिवार के लिए, छठवाँ प्रेम के लिए और सातवाँ समाज के लिए उठाया जाता है।

वर-वधू दोनों एक-दूसरे के प्रति प्रेम, कर्त्तव्य-पालन, त्याग, उत्सर्ग और बलिदान की प्रतिज्ञा करते है। इन प्रतिज्ञाओं और विवाह-संस्कार के कर्मकाण्डों में कहीं भी यह प्रतीत नहीं होता कि जीवन-साथी का चुनाव और वरण, वासनापूर्ति के उद्देश्य से होता हो, बल्कि जीवन के, व्यक्तित्व की, रिक्तता पूर्ति के लिये किया जाता है। विवाह का उधेश्य संतान है, भोग तो साधन मात्र है, वेद में उधेश्य के अलावा साधन का प्रयोग निषेध है। विवाह द्वारा पुरूष के ममत्व का विस्तार स्त्री तक होता है फिर बाल-बच्चे होने पर उसकी ओर बढ़ता है। इस तरह धीरे-धीरे विस्तार जाता हुआ गली, मोहल्ले, नगर, प्रान्त, देश और समस्त विश्व में व्याप्त होकर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के उच्चतम आदर्श की ओर बढ़ता है। यह उच्चतम आत्म विकास, प्रेम की अंतिम सीढ़ी है जो अपने परम लक्ष्य को प्राप्त हो जाती है।

विवाह संस्कार के समय यज्ञ की सात परिक्रमाओं में तीन परिक्रमा करते समय पुरूष आगे रहता है और चार परिक्रमाओं में पत्नी आगे रहती है। स्पष्ट है कि पत्नी को नेतृत्व का और प्रेरणा का अधिक अवसर दिया गया है। स्त्री शान्ति-स्वरूपा है, परिवार की शोभा है, देवी और ज्योति है। उसकी ज्योति से सम्पूर्ण परिवार प्रकाशित होता रहता है। वह घर का प्राण है। इन सभी आदर्शो की स्थापना, पालन और उन्हें परिपक्व बनाने का अभ्यास करना ही वस्तुतः विवाह का प्रधान उद्देश्य है।

सद्गृहस्थ होना सुन्दरता की पराकाष्ठा है, कोई काव्य-रसिक ही इसके रस का वर्णन कर सकता है। गृहस्थ को पहली प्रसन्नता तब होती है, जब उसके सन्तान होती है और दूसरी तब जब सन्तान के विवाह के लिये निवदेन करता है। शास्त्रकारों ने विवाह को एक भव्य संस्कार एवं महान् यज्ञ के रूप में प्रतिष्ठित किया है। टूटते परिवार, बिगड़ते बच्चे, इस बात की ओर संकेत करते है कि लोगो में गृहस्थ विज्ञान की जानकारी का अभाव है।

यदि पति-पत्नी धर्म के मार्ग पर चलते हुए एक दूसरे के लिए सच्चेभाव से समर्पण कर सकें, अपनी सुविधा छोड़, एक दूसरे की असुविधा दूर करने में दोनो पक्ष होड़ करने लगे, तो निस्सन्देह विवाह का दाम्पत्य जीवन का उद्देश्य सार्थक और सफल हो सकता है।

आईये, हम अपने ऋषि मुनियों तथा पुरातन धर्म-वेत्ताओं के बताए हुए मार्ग पर चलें और अपने दाम्पत्य जीवन को सफल बनाएँ।। ओ३म् शान्ति।।

निम्बुचोड़, चित्तौड़गण

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।
-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

आर्यसमाज के महान प्रचारक रक्त साक्षी पं० लेखराम 'आर्यमुसाफिर'

मनमोहन कुमार आर्य

आर्यजगत का कौन ऐसा व्यक्ति है जो पं0 लेखराम आर्य मुसाफिर के नाम से अपरिचित हो। 6 मार्च, सन् 1897 को उनका लाहौर में वैदिक धर्म की वेदी पर बलिदान हुआ था। उनके बलिदान का कारण था कि वह वैदिक धर्म के प्रचारक तथा व आर्य हिन्दुओं के रक्षक थे। यदि अविभाजित पंजाब सहित कहीं किसी वैदिक धर्म के अनुयायी का धर्मान्तरण होता था, तो पं0 लेखराम जी वहां पहुंचकर धर्मान्तरण करने वाले अपने भाईयों को समझाते थे और उन्हें अपने धर्म की विशेषताएं बताकर धर्मान्तरण न करने की प्रेरणा करते थे। आपने सहस्त्रों लोगों को धर्मान्तरण होने से बचाया। वैदिक धर्म के इतिहास में आप सदैव अमर रहेंगे।

पं0 लेखराम जी का जन्म पंजाब के झेलम जिले के ग्राम सैदपुर में सारस्वत ब्राह्मण कुल में हुआ था। आपकी जन्त तिथि चैत्र महीने की सौर 8 तथा वर्ष विक्रमी 1915 है। आपके पिता का नाम महता तारा सिंह था। बाल्यकाल में आपको केवल उर्दू व फारसी की शिक्षा प्राप्त हुई। आपकी यह शिक्षा आपके भावी जीवन में इस्लाम मत के ग्रन्थों का अध्ययन करने में काम आयी। बाल्यकाल से ही आप कुशाग्र बुद्धि थे तथा उर्दू-फारसी में कविता लिखने की ओर आपका झुकाव था। आपके चाचा पंडित गंडाराम पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर थे। उनके द्वारा आप पुलिस विभाग में सारजेन्ट के पद पर नियुक्त हुए। आप बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे और एकादशी का व्रत रखने के साथ गुरूमुखी भाषा में छपी गीता के श्लोकों का पाठ भी नियमित रूप से करते थे। आर्यसमाज के सम्पर्क में आने से पूर्व आप अद्वैतवाद अर्थात् जीव-ब्रह्म की एकता व समानता को मानते थे। आप में बैराग्य का भाव तीव्र अवस्था में था। इन्हीं दिनों आपको लुधियाना के एक समाज सुधारक व धर्म प्रचारक पं. कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों के अध्ययन का अवसर मिला। इससे आपको ऋषि दयानन्द और उनके समाज सुधारक कार्यों सहित वेद धर्म प्रचारार्थ आर्यसमाज की स्थापना का ज्ञान हुआ। आपने अजमेर से आर्यसमाज का साहित्य मुख्यत: सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ मंगाकर पढ़े जिससे आपके विचार बदल गये और आप आर्यसमाज के अनुयायी व सदस्य बन गये।

पं0 लेखराम जी ने संवत् 1936 विक्रमी के अन्तिम भाग में सीमा प्रान्त के पेशावर नगर, जो मुस्लिम बहुल था, वहां आर्यसमाज की स्थापना की थी। पं0 लेखराम जी को धर्म विषय में कुछ शंकायें थीं। इसके निवारण के लिये आपने महर्षि दयानन्द से मिलने का निश्चय किया। आप पुलिस की सेवा से एक महीने का अवकाश लेकर 17 मई, 1880 को पेशावर से अजमेर पहुंचे जहां ऋषि दयानन्द सेठ फतहमल की वाटिका में ठहरे हुए थे। इस स्थान पर आपने ऋषि दयानन्द के दर्शन किये तथा उनसे वार्तालाप व शंका समाधान किया। यह आपकी ऋषि दयानन्द से पहली व अन्तिम भेंट थी।

स्वामी जी के दर्शन से आपके यात्रा के सभी कष्ट विस्मृत हो गये। ऋषि दयानन्द जी के सत्य उपदेश से आपके सभी संशय भी दूर हो गये। आपने ऋषि दयानन्द से 10 प्रश्न किये और उनके उत्तर सुने। इन उत्तरों से आपका समाधान हो गया। बाद में आप अपने 7 प्रश्नों व उनके ऋषि द्वारा दिए उत्तरों को भूल गये। शेष प्रश्नों व उनके उत्तरों को स्वयं प्रस्तुत किया है। आपकी पहली शंका थी कि ब्रह्म व आकाश दोनों सर्वव्यापक हैं। यह दोनों व्यापक पदार्थ एक ही स्थान पर एक साथ कैसे रह सकते हैं?महर्षि दयानन्द ने एक पत्थर उठाया और कहा कि जिस प्रकार इसमें अग्नि, मिट्टी और परमात्मा तीनों व्यापक हैं, उसी प्रकार ब्रह्माण्ड में परमात्मा और आकाश भी व्यापक है। ऋषि ने कहा कि सूक्ष्म वस्तु में उससे भी सूक्ष्मतर वस्तु विद्यमान रहती है। ब्रह्म सूक्ष्मतम होने से सभी पदार्थों में सर्वव्यापक है। पं0 पं0 लेखराम जी ने लिखा है कि ऋषि से यह समाधान सुनकर मेरी तृप्ति हो गई। ऋषि से किये 3 प्रश्न व उनके उत्तर ये हैं-

प्रश्न- जीव व ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद का प्रमाण बतलाइये।

उत्तर- यजुर्वेद का सारा चालीसवां अध्याय जीव और ब्रह्म का भेद बतलाता है।

प्रश्न- अन्य मतों के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिए या नहीं?

उत्तर- अवश्य शुद्ध करना चाहिए।

प्रश्न- विद्युत क्या वस्तु है और कैसे उत्पन्न होती है?

उत्तर- विद्युत सब स्थानों में है और घर्षण वा रगड़ से पैदा होती है। बादलों की विद्युत भी बादलों और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है।

अजमेर से लौटकर पं0 लेखराम जी ने 'धर्मोपदेश' नाम के एक उर्दू मासिक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन किया। इसके माध्यम से उन्होंने वैदिक धर्म के सत्यस्वरूप व उसकी महत्ता का लोगों में प्रचार किया। इसके साथ ही आप मौखिक व्याख्यान भी दिया करते थे। इसी बीच पं0 लेखराम जी को किसी अन्य थाने में स्थानान्तरित कर दिया गया। इसके पीछे उनके अधिकारियों की उन्हें परेशान करने की मंशा भी थी। पं0 लेखराम जी ने इस समस्या से स्वयं को मुक्त करने के लिए 24 जुलाई सन् 1884 को पुलिस विभाग की सेवा से त्यागपत्र दे दिया। इससे उन्हें आर्यसमाज के काम में उपस्थित होने वाली सभी बाधाओं से मुक्ति मिल गई और वह पूरा समय वैदिक धर्म के लिखित व मौखिक प्रचार में व्यतीत करने लगे। इस बीच उन्होंने मुस्लिम लेखकों के वैदिक धर्म पर आक्षेपों का उत्तर लिखना भी आरम्भ

किया। वह धर्म प्रचारार्थ व ऋषि जीवन की घटनाओं के संग्रह के लिये अनेक स्थानों पर जाने लगे, जिससे उनका नाम 'आर्यपथिक' व 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया।

अहमदिया सम्प्रदाय के मुसलमानों के प्रवर्तक कदियां के मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ने एक पुस्तक 'बुराहीन-ए-अहमदिया' लिखी, जिसमें आर्यसमाज पर कटु आक्षेप किये गये थे। पं0 लेखराम जी ने इस पुस्तक का उत्तर 'तकजीब बुराहीन-ए-अहमदिया' नामक ग्रन्थ लिखकर दिया, जो अकाट्य तर्कों से पुष्ट था। मिर्जा ने दूसरी आक्षेपात्मक पुस्तक 'सर्म-ए-चश्म आरिया' लिखी जिसका उत्तर पं0 लेखराम जी ने 'नुख्स-ए-खब्त अहमदिया' लिखकर दिया। मिर्जा ने यह घोषणा भी की थी कि उसके पास ईश्वर के दूत सन्देश लाते हैं यह अलौकिक चमत्कार दिखला सकता है। वह अपने ईश्वर से प्रार्थना कर एक वर्ष के भीतर किसी भी मनुष्य को मरवा सकता है। पं0 लेखराम जी ने मिर्जा की इन सब बातों का कादियां जाकर खण्डन किया व उसे निरूत्तर कर दिया। इस विवाद के बढ़ने से कुछ समय बाद पं0 लेखराम की हत्या हुई और वह धर्म की वेदी पर बलिदान हो गये।

पंडित जी धर्म रक्षा के कार्य को करने के लिए हर क्षण तत्पर रहते थे। कहीं धर्मान्तरण व शास्त्रार्थ की आवश्यकता हो तो पं0 लेखराम जी उत्साहपूर्वक वहां पहुंचते थे और अपनी सारी शक्ति लगा देते थे। पं0 लेखराम जी की विद्वता व वाक्पटुता का लोहा उनके सभी विरोधी भी मानते थे। वह अपनी युक्तियों से बड़े-बड़े मौलवियों तथा पादरियों को निरूत्तर कर देते थे। पादरियों का व्यवहार उनके प्रति बहुत अधिक कटु नहीं होता था। मुस्लिम विद्वान अपनी कट्टरता और तात्कालीन उत्तेजना का प्रदर्शन करते हुए मोहम्मदी तलवार की धमकियां देते थे। ऐसे आक्रमणों से पंडित जी कभी नहीं घबराये। उन्हें दी जाने वाली धमकियों का उत्तर वह यह कह कर दिया करते थे कि संसार में धर्म शहीदों के रूधिर से ही फूले फले हैं और मैं अपनी जान हथेली पर लिये फिरता हूं। पंडित जी ने बहुत से सनातन धर्मी सम्भ्रान्त व समृद्ध कुलों के युवकों को धर्मभ्रष्ट होने से बचाया था। मुजफरनगर जिले के जाट रईस चौ. घासीराम और सिन्ध के रईस दीवान सूरजमल व दो पुत्रों को भी उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने से बचाया।

आर्यपथिक पंडित लेखराम जी एक नि:स्पृह उनके साधु, त्यागी और सन्तोषी प्रवृत्ति के ब्राह्मण थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब से वह मात्र 25 रूपये लेकर रात-दिन वैदिक धर्म की सेवा में व्यस्त रहते थे। बाद में उनका मासिक वेतन रात-दिन उनके पुरूषार्थ को देखकर बिना उनके कहे 25 से बढ़ाकर 35 रूपये कर दिया गया था। उनका गृहस्थ जीवन सभी उपदेशकों व ब्राह्मण वर्णस्थ बन्धुओं के लिए अनुकरणीय था व है। पंडित जी ने शास्त्र वर्णित रूद्रसंज्ञक ब्रह्मचारी की अवस्था को प्राप्त करके 36 वर्ष की आयु में विक्रमी संवत् 1950 के ज्येष्ठ महीने में मरी पर्वत के 'भन्नग्राम' की निवासी कुमारी लक्ष्मी देवी जी के साथ विवाह किया था। विवाह के बाद आपने अपनी पत्नी को पढ़ाना आरम्भ कर दिया था। ग्रीष्मकाल विक्रमी संवत् 1952 में उन्हें एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई जिसका नामकरण संस्कार वैदिक रीति से हुआ और बालक का नाम 'सुखदेव' रखा गया। पंडित जी वैदिक धर्मप्रचार में इतने व्यस्त हो जाते थे कि उन्हें अपनी पत्नी व पुत्र का ध्यान नहीं रहता था। वह चाहते थे कि उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी जी उपदेशिका बनकर उनके साथ धर्मप्रचार करें। इसलिये वह अपनी पत्नी व पुत्र को भी धर्म प्रचारार्थ साथ में ले जाने लगे। उनका पुत्र बहुत छोटा था। वह यात्रा के कष्टों को सहन नहीं कर सका और रूग्ण होकर डेढ़ वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो गया। पंडित जी ने धैर्य से इस पुत्र वियोग के दु:ख को सहन किया और वैदिक धर्म का प्रचार निरन्तर करते रहे।

महर्षि दयानन्द का 30 अक्टूबर सन् 1883 को अजमेर में बलिदान हो गया था। उनका सर्वागपूर्ण जीवन चरित लिखे जाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। यह दायित्व आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने पंडित लेखराम जी को दिया। पंडित जी ने उन सभी स्थानों पर जाकर जहां-जहां ऋषि दयानन्द जी गये थे, उनके जीवन की घटनाओं का अन्वेषण किया और जिन पुरुषों का ऋषि से वार्तालाप तथा उपदेशों आदि में साक्षात्कार हुआ था, उनसे मिलकर उनके बताये वर्णनों को उन्हीं के शब्दों में लिखकर संग्रह किया। पं0 लेखराम जी ने ऋषि जीवन ग्रन्थ की पूरी सामग्री एकत्र कर ली और जीवन चरित का लेखन आरम्भ किया। इससे पूर्व कि वह पूरा जीवन चरित लिख पाते, एक आततायी मुस्लिम युवक ने उनकी हत्या कर दी। ऋषि की मृत्यु तक का वृतान्त वह पूरा लिख चुके थे। पं0 लेखराम जी द्वारा संग्रहित सामग्री व उनकी लेखनी से लिखा गया यह ऋषि जीवन चरित्र आर्यसमाज में ऋषि दयानन्द का सर्वोत्तम जीवन चरित है। ऋषि के छोटे बड़े एक दर्जन से अधिक जीवन चरित्र उपलब्ध हैं, परन्तु अनेक कारणों से इस ग्रन्थ का महत्व सर्वाधिक है। आर्य विद्वान पं0 भवानी प्रसाद जी ने लिखा है ''पण्डित लेखराम जी संगृहीत महर्षि दयानन्द की जीवनी में साक्षियों के शब्द-प्रतिशब्द-मौलिक और लिखित वर्णन ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े बहुमूल्य हैं। उनसे ऐतिहासिक अन्वेषक को ऊहापोह पूर्वक पक्षपात रहित सत्य पर पहुंचने में बड़ी सहायता मिलती है।'' पंडित भवानी प्रसाद ने पं0 लेखराम जी के विषय में यह भी महत्वपूर्ण जानकारी दी है 'मोहम्मदी लोग पं0 लेखराम से पहले ही से द्वेष रखते थे। उन्होंने उन पर दिल दुखाने और अश्लील लिखने के कई अभियोग मिरजापुर, प्रयाग, लाहौर, मेरठ, दिल्ली, मुम्बई की फौजदारी अदालतों में दायर किये थे, किन्त न्यायाधीशों ने पण्डित जी के लेखों में कोई बात भी आक्षेपपयोग्य न पाकर उनकी तलबी किये बिना ही उन सब अभियोगों को खारिज कर दिया। इससे मुसलमान पं0 लेखराम जी से और अधिक चिढ़ गये और धर्मवीर पर उनके रोष की सीमा न रही।

शेष पृष्ठ- ६ पर

पृष्ठ-8 का शेष : आर्यसमाज के महान...

उनकी ओर से पण्डित जी को वध की धमकियां आए दिन मिलने लगीं। किन्तु पण्डित लेखराम भय का नाम भी नहीं जानते थे। आर्यपुरूषों के सावधान करते रहने पर भी उन्होंने कभी अपनी रक्षा का प्रयत्न नहीं किया।

पण्डित जी के बलिदान की घटना का विवरण भी हम पं0 भवानी प्रसाद जी के शब्दों में प्रस्तुत करना चाहते हैं। वह लिखते हैं, 'अन्त में फरवरी सन् 1897 के मध्यभाग में एक काला, गठीले बदन का, नाटा मुसलमान युवक उनके पास आया और उनसे अपने आप को हिन्दू से मुसलमान बना हुआ बतलाकर उसने अपने शुद्ध किये जाने की प्रार्थना की। धर्मवीर तो पतितों के उद्धार और शुद्धि के लिए प्रत्येक क्षण कटिबद्ध रहते थे। उन्होंने उसको प्रेमपूर्वक अपने पास बिठलाया और धर्मोपदेश देना प्रारम्भ किया।

इस मनुष्य की आंखों में भयंकरता बरसती थी। कई पुरूषों ने उनको उससे सुरक्षित करने के लिए भी चेतावनी दी थी किन्तु उन्होंने उस पर कुछ भी कान न दिया और उसको धर्मजिज्ञासु कहकर अपने हितैषियों की बात टालते रहे। एक दिन सायंकाल के समय उसी दुष्ट युवक ने अंगड़ाई लेते हुए पण्डित जी के उदर में, जबकि वे महर्षि दयानन्द जी की जीवनी में उनकी परमपद प्राप्ति के वर्णन का अध्याय अभी-अभी लिख कर उठे थे, कटारी भौंक दी, जिससे उनकी आंतों में आठ मारक घाव लगे और उनसे आधीरात तक बराबर रूधिर का प्रवाह बहता रहा। डाक्टर पेरी, सिविल सर्जन (लाहौर) उनके घावों को, दो घण्टे तक सीते रहने पर भी पण्डित जी न बच सके और उन्होंने फाल्गुन सुदि 3, संवत् 1953 विक्रमी तदनुसार 6 मार्च 1897 ई0 को रात्रि 2 बजे अपने नश्वर शरीर को वैदिक धर्म पर बलिदान कर दिया।

प्राण त्यागने से पूर्व तक उनकी चेतना में तनिक भी अन्तर नहीं आया। वे बराबर 'ओ3म् विश्वानि देव...' तथा गुरूमंत्र का पाठ करते रहे। उस समय उनको न घरवालों की चिन्ता थी, न घातक पर अप्रसन्नता और न मौत का डर था। पण्डित जी ने प्राण त्यागने से पूर्व अपने सहधर्मी मित्रों को अन्तिम आदेश यह दिया, 'आर्यसमाज से तहरीर (अर्थात् लेखन) व तकरीर (अर्थात् व्याख्यान) का काम बन्द नहीं होना चाहिए'।

पंडित जी ने प्राणपण से वैदिक धर्म और आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया और इसीलिये अपने प्राणों की आहुति भी दी। पण्डित जी के अन्तिम संस्कार में लाहौर में तीस हजार लोगों ने अपने अश्रुपूरित नेत्रें से उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। पंडित लेंखराम जी के गुण, कर्म व स्वभाव का वर्णन करते हुए पं0 भवानी प्रसाद जी ने कहा कि वह अत्यन्त त्यागी, सरल स्वभाव, प्रतिज्ञा पालन के पक्के, तेजस्वी, मन्युप्रवण, आर्यसिद्धान्त के अटल विश्वासी, अकुतोभय, वाक्पटु, सुलेखक और आदर्श धर्मप्रचारक थे।

उनके रक्तबिन्दु पृथिवी पर व्यर्थ नहीं गिरे। उन्होंने सोमनाथ वजीरचन्द, मथुरादास, तुलसीराम, सन्तराम, योगेन्द्रपाल, जगत सिंह आदि अनेक धर्माग्नि से प्रज्वलित हृदय वाले भावुक धर्मोपदेशक उत्पन्न किये थे और आशा है कि वे आगे भी ऐसे ही अदम्य उत्साह से परिपूर्ण प्रचारकों को जन्म देता रहेगा उनका प्रेरक जीवन।

देहरादून (उत्तराखण्ड)

'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ'

बड़ी ही मार्मिक व प्रेरक है यह पुस्तक

साहित्य-सृजन का लक्ष्य केवल मनोरंजन नहीं है। साहित्य समाज का पथ-प्रदर्शक है, समाज की उंगली पकड़ कर उसे सन्मार्ग दिखाने वाला उपदेष्टा भी है। यदि समाज में कहीं स्खलन है, भटकाव है तो उसे चेतावनी देना साहित्यकार का परम दायित्व है। इस कसौटी पर हिन्दी की प्रख्यात लेखिका रश्मि अग्रवाल द्वारा रचित चिन्तन-परक ग्रन्थ 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ' खरा उतरता है। कन्या भ्रूण-हत्या आज एक फैशन बन चुका है। बेटी के सम्मान और सुरक्षा की दुहाई देने वाले प्रबुद्ध नागरिक अपनी पुत्र-वधु के गर्भवती होने पर गर्भस्थ नन्हीं बालिका का गर्भपात करवाते समय लेशमात्र भी संकोच नहीं करते। नव दुर्गा पर्व पर वे कन्याओं का पूजन करते हैं, लेकिन अपने घर-आँगन में आने वाली नन्हीं किलकारी का निर्ममतापूर्वक गला घोंटने में उन्हें तनिक भी कष्ट नहीं होता।

रश्मि अग्रवाल एक प्रबुद्ध चिन्तक हैं। उन्होंने वैज्ञानिक धरातल पर यह शोध प्रस्तुत किया है कि कन्या को जन्म देने के लिए केवल माँ उत्तरदायी नहीं है। फिर भी स्त्री के साथ इस सभ्य समाज में युगों से ऐसा बर्बरता-पूर्ण व्यवहार क्यों होता आ रहा है? आखिर कब तक समाज के ठेकेदार पुत्र-मोह में पड़कर कन्याओं की निर्मम हत्या करते रहेंगे?

वे कन्या की द्रवित करने वाली पुकार को इस प्रकार लिखती हैं- ''लेने दो जन्म मुझे भी माँ, बेटे से बढ़ दिखलाऊँगी।/धरा का सुख क्या चीज है माँ अम्बर के तारे लाऊँगी।।''

प्रबुद्ध लेखिका ने ग्रन्थ के सृजन में अथक परिश्रम किया है। उन्होंने केवल भारत के ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व के प्रमुख देशों के आँकड़े प्रस्तुत करके ठोस तथ्य प्रस्तुत किये हैं, जो विशेष सराहनीय हैं। लेखिका ने भारत के विभिन्न प्रान्तों में कन्याओं के घट रहे लिंगानुपात का सूक्ष्म सर्वेक्षण प्रस्तुत किया है। चीन, नाइज़ीरिया, इण्डोनेशिया और संयुक्त अरब अमीरात की रिपोर्ट प्रस्तुत की है, जहाँ बालिकों के अनुपात में बालिकाओं की संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है।

लेखिका आहवान करती है कि समाज को जागना होगा, कन्या भ्रूण-हत्या के जघन्य पाप पर विराम लगाकर लिंग अनुपात में आ रही कमी पर हमें नियन्त्रण लगाना होगा। कवयित्री के शब्दों में- ''बेटी है तो आज है, बेटी है तो कल।/बेटी से खुशियाँ मिलें, जीवन में हरपल।।''

लेखिका ने नारी-शिक्षा पर ही नहीं, महिलाओं के स्वास्थ्य पर भी गम्भीर चिन्तन प्रस्तुत किया है। उन्होंने हमें अनावश्यक गर्भपात से होने वाले खतरों से भी परिचित कराया है तथा इससे उत्पन्न बीमारियों की रोकथाम के उपाय भी बताये हैं।

लेखिका ने महिलाओं के लिए 'स्वावलम्बी कैसे बने?', 'महिलाओं में कॅरियर', 'कम्प्यूटर शिक्षा और कॅरियर', 'बुटीक खोलें', 'कुछ नया सोंचे', 'वेब डिज़ाईनिंग में अवसर', 'बने ग्राफिक डिज़ाईनर' आदि संबंधी विचार भी प्रस्तुत किये हैं। जिन पर अमल करके शिक्षित व गैर शिक्षिक महिलायें पूर्ण आत्मनिर्भर बन सकती हैं। 'भारतीय संविधान और महिलायें' प्रकरण में राज्य के नीति - निदेशक तत्वों का वर्णन करते हुये लेखिका ने महिलाओं के अधिकारों की शानदार वकालत की है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि महामहिम पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा सम्मानित व शताधिक अलंकरणों से समलंकृत यशस्वी कवयित्री, लेखिका रश्मि अग्रवाल का यह ग्रन्थ नारी-सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रज्ज्वलित मशाल का कार्य करेगा।

समीक्षक-
डॉ० राम बहादुर 'व्यथित'
विजय वाटिका, कोठी नं०-३
सिविल लाइन्स, बदायूँ (उ०प्र०)
मो. : ९८३७६१८७१५

भ्रान्तियां मिटाने वाली एक अनूठी कृति है

रामायण का वास्तविक स्वरूप

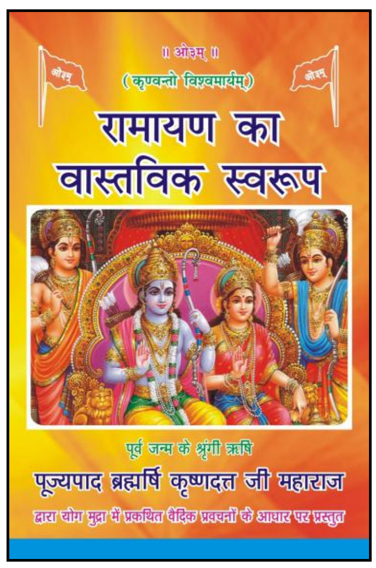

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी (पूर्व जन्म के श्रृंगी ऋषि) द्वारा योग मुद्रा में प्रकथित प्रवचनों के आधार पर तैयार की गयी लघु पुस्तक 'रामायण का वास्तविक स्वरूप' एक ऐसी संग्रहणीय, पठनीय व महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसके माध्यम से रामायण काल के महापुरूषों के विकृत व दिग्भ्रमित करने वाले रूपों का वास्तविक स्वरूप सामने आता है। इस पुस्तक में मुख्य पात्र परिचय श्रीराम के पूर्वज 'रघु से दशरथ तक' पुत्रेषि यज्ञ, जनक पुत्री सीता, लक्ष्मण रेखा विज्ञान, रावण व उसका विशाल साम्राज्य, राम-रावण तुलना व अश्वमेघ याग आदि के विषय में महत्वपूर्ण व ज्ञानवर्धक सामग्री समाहित है। इस पुस्तक को बड़ी संख्या में वितरित किया जाना चाहिए।

रामायण का वास्तविक स्वरूप
प्रकाशक- आर्यावर्त प्रिंटर्स, सौम्या सदन-गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) मो. 9412139333

समीक्षक- डॉ. बीना रुस्तगी

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित

महापुरूषों के संक्षिप्त जीवनवृत्तों पर आधारित लघु एवं संग्रहणीय पुस्तिका

प्रखर राष्ट्रचेता- महात्मा लेखराम

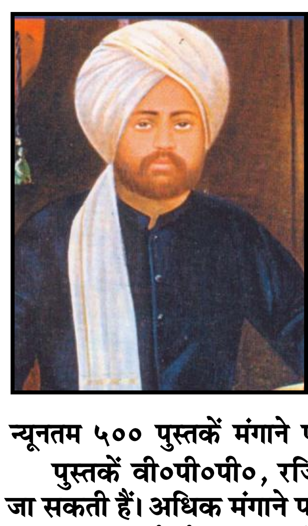

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि सहित महापुरूषों की जयंतियों व पुण्यतिथियों के अवसर पर सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द का संदेश। **मूल्य :** 10/-

न्यूनतम ५०० पुस्तकें मंगाने पर नाम व चित्र प्रकाशन की भी सुविधा।
पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांसपोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

आर्यों से निवेदन

वैदिक ज्ञान एवं आर्य समाज के मंतव्यों का प्रचार-प्रसार करने के लिए आर्य लेखक श्री ओम प्रकाश आर्य ने 50 प्रकार के शिक्षण-सामग्री कैलेण्डर बनाए हैं। इनके फ्लैक्स बनवाकर अथवा कागज पर प्रिंट करवाकर वैदिक ज्ञान को सरलता से समझाया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018, दिल्ली में इन कैलेण्डरों की प्रदर्शनी लगी थी। इन्हें घरों, आर्य समाजों, आर्य विद्यालयों, आर्य गुरुकुलों, व अन्य उचित जगहों पर लगाया जा सकता है। आर्य विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए इच्छुक महानुभाव मंत्री, आर्य समाज, रावतभाटा (कोटा) मो. : 09462313797 पर अपना ईमेल पता एसएमएस करके प्राप्त कर सकते हैं। ये कैलेण्डर बड़े ही आकर्षक, ज्ञानवर्द्धक एवं सुरुचिपूर्ण भावों वाले हैं।

निवेदक- नरदेव आर्य, प्रधान- आर्य समाज, रावतभाटा (कोटा) राजस्थान

आर्य समाज, आर्य श्रीमाली सोनी परिवार, प्रगति मण्डल, राजकोट (गुजरात)

सदस्य बनें

गुजरात राज्य तथा गुजरात के बाहर तमाम गुजराती श्रीमाली व सोनी परिवार सदस्य बनने के लिए सादर आमंत्रित हैं। कृपया आगे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार या संपर्क करें। सदस्यता नि:शुल्क है।

पता : आर्य भाईलाल शिवलाल सोनी, म0नं0- 101, केशव एपार्टमेंट नं0-1, ठाकुरद्वार पार्क नं0-1, नया मोरबी रोड, मधुबन स्कूल के पास, पोस्ट- बेडीपुरा, राजकोट (गुजरात)-360003, मोबा. : 09712370185

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, सासनी

जनपद हाथरस (उ०प्र०)

प्रवेश प्रारम्भ सत्र-2019-20

नोट : कन्या गुरुकुल में प्रवेश परीक्षा के आधार पर लिया जायेगा

1- कक्षा शिशु (नर्सरी) से नवम तक किसी भी कक्षा मे लिया जा सकता है।

2- कक्षा 11वीं तथा 13वीं (उत्तर मध्यमा, विद्याविनोद, शास्त्री, विद्यालंकार) कक्षा में भी प्रवेश लिया जा सकता है।

3- प्रवेश के समय छात्रा के पासपोर्ट साइज तीन रंगीन फोटो तथा छात्रा से मिलने वाले किन्हीं चार व्यक्तियों के पासपोर्ट साइज रंगीन फोटो, अंकतालिका, काउण्टर साइन टी0सी0, पहचान पत्र, आधार कार्ड साथ लेकर आयें।

4- मान्यता- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार; सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

5- नवीं से बारहवीं तक गुरुकुल कांगड़ी के पाठ्यक्रम में (एन0सी0ई0आर0टी0) का पाठ्यक्रम संचालित है।

6- नवीं से बारहवीं कक्षा तक कला वर्ग के साथ-साथ विज्ञान वर्ग का भी पाठ्यक्रम संचालित है।

7- **अतिरिक्त प्रशिक्षण**

1- संगीत (गायन, वादन, तबला) में प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की परीक्षाएं (जूनियर डिप्लोमा से लेकर संगीत प्रभाकर तक) संचालित हैं। 2- खेलकूद तथा शारीरिक प्रशिक्षण (जूडो-कराटे, बैडमिंटन, खो-खो)। 3- योग-प्रशिक्षण

—डॉ0 पवित्रा विद्यालंकार, मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या

मोबा. : 9458480781, 9258040119, 8006340583, 9927991622, 7830289379

ईमेल : kanyagurukulmhv.hathras@gmail.com, kgpiti2007@gmail.com, वेबसाइट : kanyagurukul.in

विशेष : कन्या गुरुकल सासनी अलीगढ़-आगरा मार्ग पर हाथरस के निकट स्थित है।

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333

ज्योतिष पाठ-5 ऋतुओं का कारक सूर्य या चन्द्रमा

आचार्य दार्शनेय लोकेश

आचार्य दार्शनेय लोकेश की ज्योतिष कक्षा

समय समय पर ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने के अतिरिक्त लोगों को ज्योतिष जानकारी में प्रवृत्त करने की चाह से आचार्य दार्शनेय लोकेश ने ज्योतिष पाठों का लेखन किया है ताकि वैदिक पत्र-पत्रिकाओं में इनके क्रमिक प्रकाशन से ज्योतिष का सही ज्ञान प्रसारित करने और साथ ही साथ ज्योतिष के तिकड़मी दुरुपयोग से दूर रखने में सहायता मिल सके। इसी उद्देश्य से आचार्य दार्शनेय लोकेश के ज्योतिष सम्बन्धी पाठों को 'आर्यावर्त केसरी' में, **"आचार्य दार्शनेय लोकेश की ज्योतिष कक्षा"** स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जा रहा है। धन्यवाद। **—सम्पादक**

अथर्ववेद ६/३७/२ 'स विश्वा प्रतिचाक्लृपे ऋतूनुत्सृजतेवशी' अर्थात् वह अग्नि स्वरूप वैश्वानर प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न करता है वश में करता है। वह ऋतुओं का उत्सर्जन अर्थात् निर्माण करता है। शतपथ ब्राह्मण २/२/३/८ में भी कहा गया है कि 'आदित्यस्त्वेवसर्वऋतवः' अर्थात आदित्य ही सब ऋतु का कारक है। इसी प्रकार काठक संहिता में 'असौ वा आदित्यः ऋतुः' कहकर ऋतुओं का कारक सूर्य को ही इंगित किया गया है।

चंद्रमासों के समान हम सौर मासों को स्थूलता से नहीं जान सकते। अमावस्या और पूर्णिमा से चांद्रमासों की दृश्यता कुछ सहज है जबकि सौरमासों का यथार्थ ज्ञान क्रांतिजन्य होने से (स +क्रान्ति=क्रान्ति के साथ) वेध और छायार्क साधन का विषय हैं। सत्य ये है कि 'चान्द्र मासाः अनुवर्ती मासाः'। चांद्र मास गौण मास हैं। प्रधान मास सौर आर्तव मास ही हैं। इसी प्रकार चांद्र मासों से कही गयी ऋतुवें भी गौण ही हैं।

सूर्य हमारे निवास रूपी भूगोल से लाखों गुना बड़ा है उसके चारों ओर ग्रह उपग्रह धूमकेतु आदि निरंतर घूम रहे हैं वही इन सब को बस में रखता है। सूर्य ही दिन और रात का, मासों का ऋतुओं का, उत्तरायण दक्षिणायन और सर्वान्ततः संवत्सर का निर्माता है। 'मासास्ते काल्पतामृतवस्ते कल्पतां संवत्सरस्ते कल्पतम्'। यजुर्वेद २७/४५ में यही कुछ अभिव्यक्त है। विचार करने पर यह भी स्पष्ट होता है कि चन्द्रमा के संचरण से बनाने वाली प्रतिपदादि तिथियां भी मौलिक रूप से सूर्य के कारण ही संभव हैं। प्रत्येक तिथि के १२ अंश की गणना भी सूर्य की सापेक्षता से ही गणित हैं। सूर्य के पास अगर चन्द्रमा की तरह अपना प्रकाश नहीं होता तो कदाचित वह भी दिन और रात्रि नहीं दे सकता था। ये स्थिति जबकि चन्द्रमा के साथ सर्वदा ही उपलब्ध है अर्थात् उसके पास अपना प्रकाश भी नहीं है। अस्तु, पृथ्वी का ये उपग्रह ऋतुओं को कैसे बना सकता है? नहीं बनाता है।

श्री विष्णु पुराण २/८/७०' 'मासः पक्षद्वयेनोक्तो द्वौ मासौ चार्कजावृतुः, ऋतू त्रयं चाप्ययनं द्वे अयने वर्ष संज्ञिते।' यहाँ 'च अर्क+ज+ऋतुः' पर ख़ास ध्यान देने की आवश्यकता है। दो सौर मास की एक ऋतु और तीन ऋतु का एक यन तथा दो अयन ही (मिलाकर) १ वर्ष कहे जाते है। अथर्ववेद के सप्तम काण्ड सूक्त ८१ और मंत्र संख्या 1 में 'पूर्वापरं चरतौ माययैतौ शिशू क्रीडंन्तौ परियातोर्णवम्। विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतूंरन्यो विदधज्जायसे नवः।।' यहाँ ऋतुओं को धारण करते हुए चन्द्रमा को नया होना कहा गया है।

निष्कर्ष पर आने के लिए यह समझना जरूरी है कि चंद्रमा अगर बिल्कुल भी नहीं होगा तो भी दिन और रात होंगे, मास (महीने) और ऋतुवें होंगी, नहीं होंगे तो केवल शुक्ल और कृष्ण पक्ष नहीं होंगे अर्थात तिथियां नहीं होंगी। इसी प्रकार से राहु और केतु नहीं होंगे क्योंकि जब चन्द्रमा नहीं होगा तो उसके विमंडल के होने का सवाल ही नहीं होता। पुनः जब राहु और केतु ही नहीं होंगे तो फिर चंद्र तथा सूर्य ग्रहण भी नहीं हो सकते। स्पष्ट है कि चंद्रमा के न होने का ऋतु पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि ऋतुवें केवल और केवल सूर्य से प्रभावित हैं। पृथ्वी ऋतुओं की भोक्ता है और सूर्य ऋतुओं का कर्ता है। अब आइये सूर्य की तरफ। अगर सूर्य नहीं होगा तो क्या होगा? अगर सूर्य नहीं होगा तो ब्रह्मांड में कुछ भी नहीं होगा। जब समस्त ऊर्जाओं का मूल स्रोत ही खत्म हो जाएगा तो तब ऊर्जा के बिना सृजन सम्भरण और संहार यह तीनों ही अर्थहीन हो जाएंगे।

गोपथ ब्राह्मण में इस बात का उल्लेख हुआ है कि 'आत्मा वै संवत्सरस्य विषुवान् अंगानि मासाः' अर्थात 'विषुव दिन' संवत्सर का आत्मा है, मास (महीने) उसके अंग हैं। उसके दो पक्ष हैं एक दक्षिण पथ (दक्षिण गोल) और दूसरा उत्तर पक्ष (उत्तर गोल)। ज्ञातव्य है कि संवत्सर को 'संवसन्ति ऋतवः इत्यर्थः' अर्थात संवत्सर जिसमें कि ऋतुओं का वास हो, ऐसा कहा गया है। विषुव ही उसका उद्घाटक है और विषुव सूर्य की देन है।

वैदिक विद्वानों के लिए खास तौर पर जानने योग्य है कि धर्म सिन्धु और निर्णय सिंधु जैसे ग्रंथों ने चांद्र ऋतुओं का विचार दिया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में धर्म सिंधु जैसे ग्रंथों को कपोल कल्पित ग्रन्थ कहा है।

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित महापुरुषों के संक्षिप्त जीवनवृत्तों पर आधारित लघु एवं संग्रहणीय पुस्तिका

प्रखर राष्ट्रचेता- महर्षि दयानन्द

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि सहित महापुरुषों की जयंतियों व पुण्यतिथियों के अवसर पर सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द का संदेश। **मूल्य :** 10/-

न्यूनतम ५०० पुस्तकें मंगाने पर नाम व चित्र प्रकाशन की भी सुविधा। पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

लाडली बिटिया

डॉ. अशोक रस्तोगी

भीनी गन्ध उड़ाती है, कभी तितली सी उड़ जाती है!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
कभी फूल सी इठलाती है, फिर पंकज बन जाती है!
कांटा सी नहीं चुभती, पांखुरी बन जाती है!
पराग सी खुशबू उड़ाती है, कोने-कोने में छा जाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
साज बनती है, तो कभी संगीत बन जाती है!
गजल बनती है, तो कभी गीत बन जाती है!
कथा कभी बनती है बेटी, फिर कविता बन जाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
खिल जाता उसकी हंसी से, घर का कोना-कोना!
मानती है कर्त्तव्य अपना, बिखरी हर वस्तु संजोना!
कमनीय कोमल सा शरीर लिए, पर्वत बन जाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
पढ़ती रहती सतत, फिर लिखने भी लगती है!
और कभी तो पूरी रात, वह जागती मिलती है!
नयन मूंद लेती है बेटी, फिर थककर सो जाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
सबका सत्कार वह करती है, सम्मान लुटाती है!
कभी बोझ नहीं बनती, स्वयं सब बोझ उठाती है!
नेह का दरिया बन जाती है, प्रेम का रस बरसाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
सोचता हूं! एक दिन, मेरा मस्तक ऊँचा करेगी वह!
ऊपर उठेगी, इतना उठेगी, आसमान छुएगी वह!
मेरी आंखें नम हो जाती हैं, जब वह विश्वास दिलाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!

अफजलगढ़, बिजनौर (उ.प्र.)
मोबा. : 9411012039

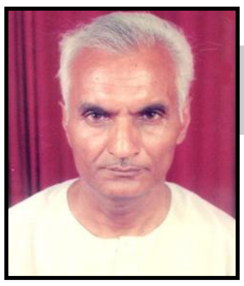

अथर्ववेद रस रंग

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

मंत्र- यो भूतं च भव्यं सर्वं यश्चाधितिष्ठति। स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।१।।

काव्यार्थ- गीत

नमन उस प्रभु को बारम्बार।
जिस प्रकाश स्वरूप प्रभु को करते सब स्वीकार।।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान का जो कि अधिष्ठाता है,
सर्वश्रेष्ठ, अति ही महान, भक्तों की निष्ठा का है;
जिसके भीतर सर्व सुखों का रहता है भण्डार।।

मंत्र- स्कम्भेनेमे विष्टभिते द्यौश्च भूमिश्च तिष्ठतः। स्कम्भ इदं सर्वमात्मन्वद्यत्प्राणन्निमिषच्च यत्।।२।।

काव्यार्थ- गीत

जगत् को धार रहा जगदीश।
वह अति ही सामर्थ्यवान् है, उसे झुकाओ शीश।
वर्तमान है उसमें ही जग, चैतन्य स्थावर,
थाम रहा है विविध भाँति से इसको वह यायावर;
जिन स्थान पर टिके उसी से दिनपति अरु रजनीश।।

देहरादून (9412635693)

दोहे

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

बालक का कोमल हिया, छल छन्दों से दूर।
जग वालों से सीखता, छल कौतुक भरपूर।।
जो कुछ तेरे पास है, मान ईश आभार।
दिया नहीं जो ईश ने, उसका दुःख बेकार।।
जन्म लेत ही आदमी, होता नहीं महान।
रैन तिमिर के बाद ही, आता नवल विहान।।
बात बात की बात में, बढ़ जाती है बात।
तोल तोल कर बोल से, बनती बिगड़ी बात।।
रेख हाथ की देखकर, तू जाता घबराय।
किस्मत अपनी आप ही, हाथों से बन जाय।।
उसने रच कर दे दिया, करते हम उपभोग।
देने वाला और है, भूल गये हम लोग।।
अहंकार हो ज्ञान का, ज्ञान नहीं टिक पाय।
अवगुण गुण से आ गया, सभी गुणों को खाय।।
हक अपने सब मांगते, छीन झपट कर पाय।
भूले बैठे फर्ज सब, कौन याद दिलवाय।।

502 जी एच 27, सैक्टर 20 पंचकूला
मो. 09467608686

हे भारत माता

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

हे भारत माता तेरा अभिनन्दन
तेरी मिट्टी का कण-कण चन्दन
चाहूँ तेरे चप्पे-चप्पे में हो उजियारा
दूध-दही की बहती रहे सदा नदी धारा
यहाँ के नेताओं को मिले सद्बुद्धि
विधणमयों की हो जाये बस शुद्धि
कोई जन न कर पाये कभी क्रंदन
हे भारत माता तेरा अभिनन्दन
आतंकवाद-नक्सलवाद मिट जाये
राष्ट्रप्रेम का गीत घर-घर गाया जाये
मंदिर-मस्जिद में न हो कभी लड़ाई
हिंदू-मुस्लिम बनकर रहें यहाँ भाई-भाई
झूठ, कपट, छल, द्वेष का हो खंडन
हे भारत माता तेरा अभिनन्दन
सुभाष, भगत, बिस्मिल का स्वप्न हो साकार
दीन-दुखी, निबल-बिकल रहे न कोई लाचार

ग्राम रिहावली, डाक तारौली गुर्जर,
फतेहाबाद, आगरा, २८३१११

वैदिक कर्मकाण्ड, प्रवचन, आयुर्वेद सम्बन्धी परिचर्चाओं के लिए सम्पर्क करें

सुमन कुमार वैदिक
(वैदिक प्रवक्ता)
निवास- जे.-380, बीटा-II,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
मो. 8368508395, 9456274350

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित

महापुरुषों के संक्षिप्त जीवनवृत्तों पर आधारित अनेक लघु एवं संग्रहणीय पुस्तकें

प्रखर राष्ट्रचेता- सरदार पटेल

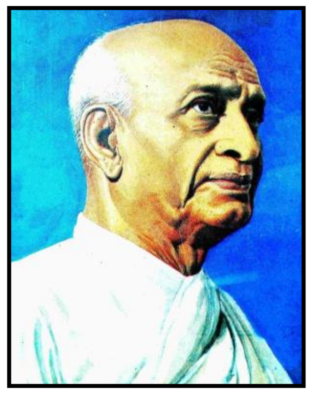

प्रखर राष्ट्रचेता- स्वामी विरजानन्द

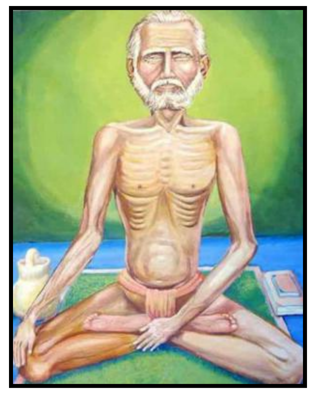

प्रखर राष्ट्रचेता- रामप्रसाद बिस्मिल

प्रखर राष्ट्रचेता- स्वामी श्रद्धानन्द

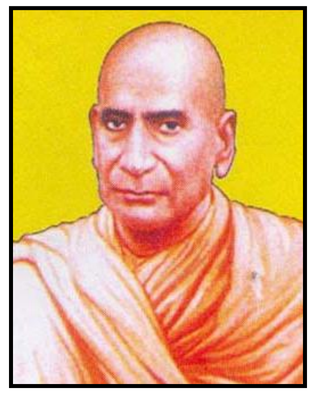

प्रखर राष्ट्रचेता- चन्द्रशेखर आजाद

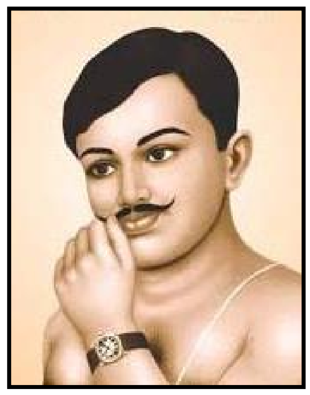

प्रखर राष्ट्रचेता- महात्मा हंसराज

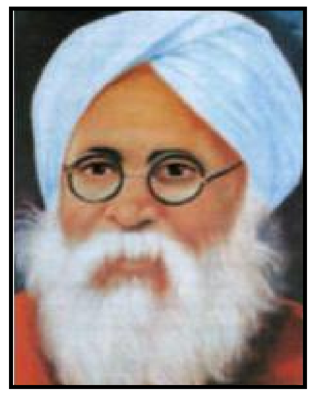

प्रखर राष्ट्रचेता- सरदार भगत सिंह

ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के जीवनवृत्तों पर आधारित 'प्रखर राष्ट्रचेता' शीर्षक से प्रकाशित अनेक लघु पुस्तकें। प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए ये प्रेरक पुस्तकें। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बाटें और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज, वैदिक धर्म व राष्ट्र क्रान्ति का उद्घोष।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य है १०/-, साथ ही बिक्री पर है छूट भी

न्यूनतम 500 पुस्तकें मंगाने पर नाम व चित्र प्रकाशन की भी सुविधा।

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांसपोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन
सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)
मोबा. : 9412139333

आर्य समाज, संचार नगर, इन्दौर के तत्वावधान में २७वें गुरु विरजानन्द ट्रस्ट द्वारा आयोजित सर्वजातीय परिचय सम्मेलन का दृश्य- केसरी

गुरु विरजानन्द वैदिक ट्रस्ट द्वारा २७वां सर्वजातीय परिचय सम्मेलन सम्पन्न

आगामी परिचय सम्मेलन होगा २२ दिसम्बर को

प्रणवीर शास्त्री
इन्दौर (मध्य प्रदेश)।

गुरु विरजानन्द वैदिक ट्रस्ट एवं आर्यसमाज संचार नगर, इन्दौर (म. प्र.) के तत्वावधान में 27वां सर्वजातीय परिचय सम्मेलन संतोष सभागृह रानी सती गेट में सम्पन्न हुआ। हिन्दू सर्वजातीय युवक-युवती परिचय सम्मेलन में म.प्र. के अलावा राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, छत्तीसगढ़, बिहार, उ.प्र., दिल्ली आदि से आये लगभग 200 प्रत्याशियों ने अपना-अपना परिचय दिया। इसमें अविवाहित प्रत्याशियों युवक-युवतियों ने भी काफी संख्या में अपने लिए चयन किया। प्रत्याशियों में अपनी तथाकथित जाति को छोड़कर अन्य जातियों में भी अधिकांश प्रत्याशियों के अपने जीवनसाथी को ढूंढा। मुख्य संयोजक बलराज सबलोक ने दी। 'सर्वजातीय परिणय स्मारिका' का विमोचन हुआ जिसमें लगभग 150 युवतियों एवं लगभग 250 युवकों के (बायोडाटा) (फोटो नाम पते के साथ प्रकाशित) बायोडाटा फोटो का प्रकाशन किया गया है, जिसमें 95 प्रतिशत प्रत्याशियों की अन्तर जातीय संबंध करने की इच्छा है। सम्मेलन में अविवाहित युवकों ने तलाकशुदा युवतियों से भी वैवाहिक संबंध ढूंढे। ये जानकारी डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (अध्यक्ष गुरु विरजानन्द ट्रस्ट एवं अध्यक्ष, अखिल भारतीय आर्य सभा, म.प्र.) ने दी।

प्रवेश देवड़ा ने बताया कि आर्य विवाह एप्प डाऊनलोड करके अथवा www.aryavivah.com प्रवेश पर जाकर भी सर्वजातीय सम्मेलन के प्रत्याशियों की अधिक जानकारी ले सकते हैं। अन्त में श्रीमती गायत्री सोलंकी ने कहा कि 22 दिसम्बर 2019 को अगला सर्वजातीय परिचय सम्ममेलन होगा। अंत में सभी का आभार एवं धन्यवाद किया।

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
(मोबाा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य